रसिक दोउ निरतत रंग भरे।
रास कुंज में रास मंडल रचि, जनक लली रघु लाल हरे।।
अमित रूप धरि करि कछु चेटक, जुग जुग तिय मधि श्याम अरे।।

51
जानकी शरण

15
जानकी शरण
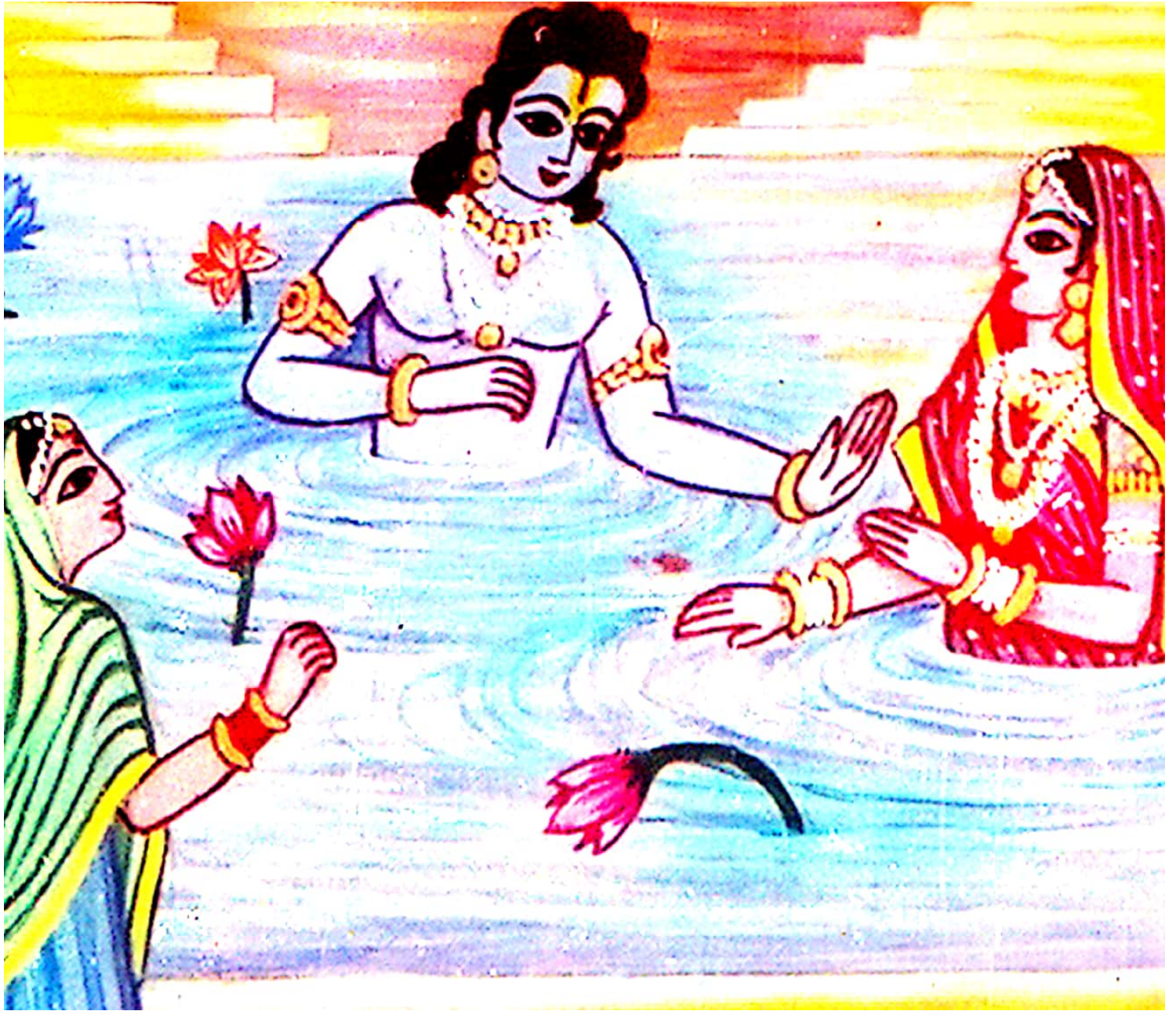
33
१-५-२०००
सर्वाधिकार सुरक्षित
चतुर सखी सब मिलि के आजु पिय प्यारी को करति श्रृंगार!
बेनी अलक सुधारि अतर सौं मनि हीरन मोतिन लगो तार!!
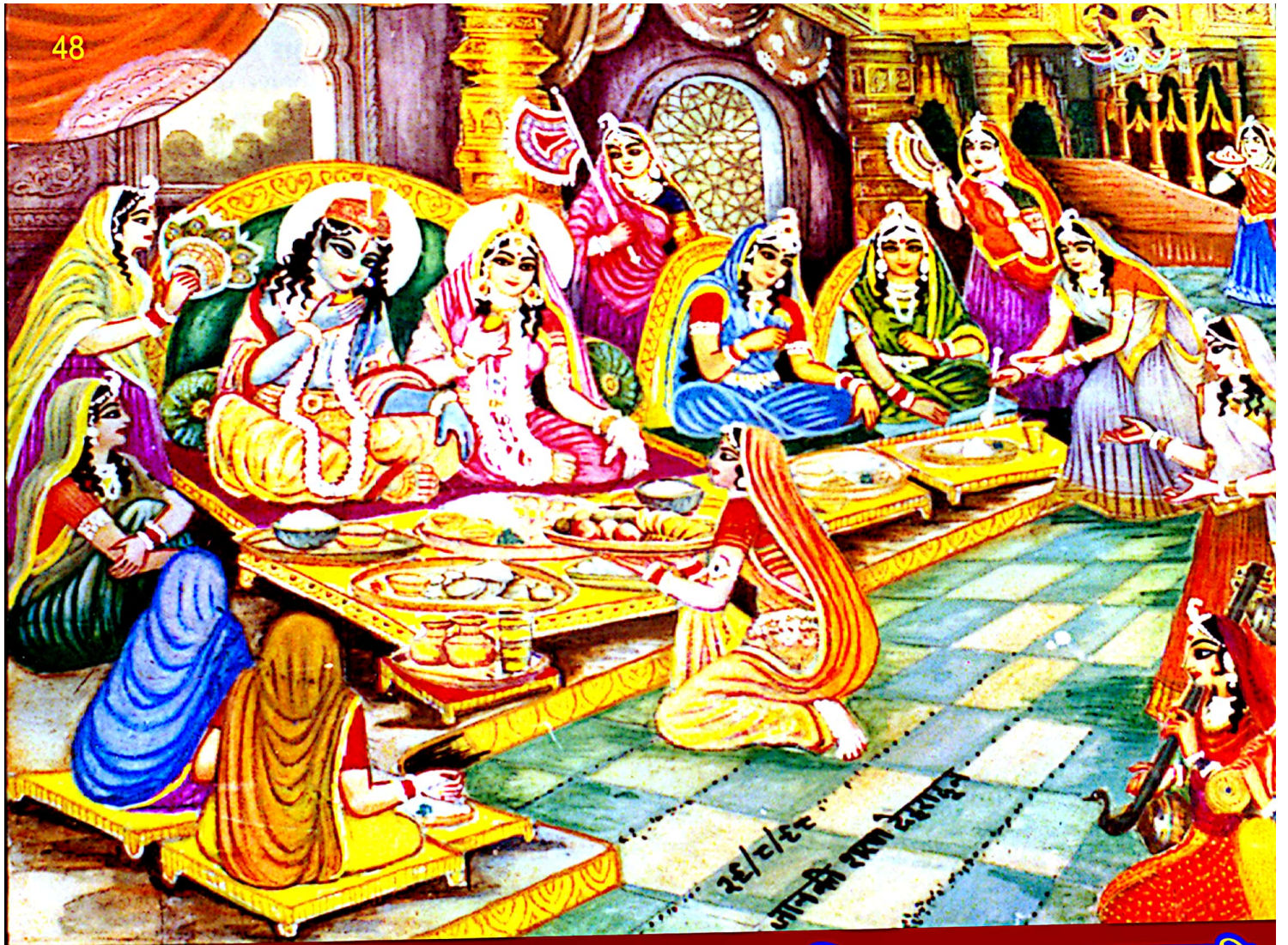
जानकी शरण देहरादून

श्री युगल रहस्य माधुरी विलास

* तृतीय भाग *

लेखकः—

श्रीमद् अग्रदेवाचार्य वंशावतंश

अनन्त श्री जानकी शरणजी महाराज "मधुकर"

तच्चरणारविन्द भ्रमर

"सीताशरण"

श्री तुलसी साहित्य प्रकाशन मण्डल, रामकोट

श्रीअयोध्याजी (उ०प्र०)

श्री श्रीसीताराम श्रीसीताराम श्रीसीताराम

श्री मैथिली रमणो विजयते

श्रीमत्यै सर्वेश्वर्यै श्रीचारुशीलायै नमः

श्रीमन्मारुतनन्दनाय नमः

श्रीमते भगवतेश्री रामानन्दाचार्याय नमः

श्री सद्गुरवे नमः

श्री युगल रहस्य माधुरी विलास

तृतीय भाग

लेखकः-श्रीमद्अग्रदेवाचार्य वंशावतंश
अनन्त श्री जानकी शरण जी महाराज मधुकर
तच्चरणारविन्द भ्रमर 'सीताशरण'

प्रकाशिका :—

श्री जनकजा दुलारीजी (निर्मला कुमारी राठौर)
भागीरथ निवास, सी/४५-धर्मनारायण का हत्था
पावटा, जोधपुर (राजस्थान)

(शरद् पूर्णिमा के पावन पर्व पर)

प्रथमावृत्ति-१००० 卐 न्यौछावर-२१) रु०

[सम्बत् २०४६ सन् १९८९]

श्री श्रीसीताराम श्रीसीताराम श्रीसीताराम

श्रीरामजी रामायणी की सम्मति

"श्री युगल रहस्य माधुरी विलास" तृतीय भाग का अवलोकन किया। यत्र-तत्र अवलोकन से यह ग्रन्थ रसिकोपासना वाले सन्तों-सहृदयों के भावानुकूल प्रतीत हुआ। वैसे कौशल खण्ड का अवलोकन अद्यावधि मैंने नहीं किया है। इस लिये उसके विषय बस्तु से अपरिचित ही हूँ। फिर भी इस तृतीय भाग के अवलोकन से इस ग्रन्थ की सरसता का सहज ज्ञान होता है।

अनुवादक स्वामी श्री सीताशरण जी ने बड़े ही ललित पदावलियों में इस ग्रन्थ के भावों को उद्‌घाटित किया है। इस भावुक ग्रन्थ रत्न से सन्तों के रसिक भाव का पोषण होगा ऐसी पूर्ण आशा है।

किमधिकम्।

रामजी 'रामायणी'
श्री सद्‌गुरु निवास गोलाघाट
श्रीअयोध्याजी (उ०प्र०)

❁ श्रीरसिकेश्वराय नमः ❁

श्री श्री १०८ पं० श्रीहरिनामदासजी महाराज 'वेदान्ती'जी की

卐 शुभ-सम्मति 卐

अखिल ब्रह्माण्ड नायक परात्पर प्रभु भगवान श्रीसीतारामजी को प्राप्त करने केलिए अनेक साधनों का उल्लेख आर्ष ग्रन्थों में मिलता है। "सत्पादि त्रियुगे ज्ञान वैराग्यौ मुक्तिसाधकौ, कलौतुकेवला भक्ति-ब्रह्म सुयुज्य कारिणी" इस श्रीमद्भागवत की युक्ति के अनुसार सत्ययुग त्रेता द्वापर में ज्ञान वैराग्य से भी भगवत प्राप्ति का विधान मिलता है कलियुग में तो केवल भक्ति से ही भगवत प्राप्ति होती है, वह भक्ति "श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पाद सेवनं अर्चनं वन्दनंदास्यं सख्य मात्मनिवेदनम्" इस श्री प्रहलाद जी की उक्ति के अनुसार–नव प्रकार की है। नथधा भक्ति के सेवन से प्रेमा भक्ति की प्राप्ति का निर्देश मिलता है।

यथा–नवधा सेवनात् सम्यग् भाव वृद्धेरनन्तरम्, प्राब्रण्नदीव कल्लोलतरंगावर्त वेगतः समुद्रं विशते ह्येवं स्नेहवृत्तिःपरेश्वरे प्रेमैषा सर्वदोषाणां दहने दहनोपमा" (लोमश रामायण) वह प्रेमाभक्ति पांच प्रकार के भाव में विभक्त है। यथा–"शान्तोदास्यं वात्सल्यं सख्य श्रृंगार मेव च, पंच भेदर्विभिः प्रोक्ता भक्तिर्रागानुगात्मिका" (लोमश) इसी को पंच रसोपासना भी कहते हैं। और भगवान भाव के वश में हैं, यथा–"भाववस्य भगवान सुखनिधान करुणाभवन" (मानस) जिस भाव से भक्त भगवान की उपासना अर्थात अष्टयामसेवा करते

हैं। अन्तमें उस भक्त को उसी भावात्मक स्वरूप एवं सेवा की प्राप्ति होती है। यथा—"यं यं वाप्यस्मरन् भावं त्यजत्यन्ते कलेवरं तं तमेवेति कौन्तेय सदा तद्भाव भावितः" (गीता) इन पंच रसों में श्रृंगार रस की प्रधानता है, श्रृंगार रस के रहस्यमय अन्तरंग प्रसंगों का विशेष प्रतिपादन कोशल खण्ड नामक ग्रंथ में किया गया है, परन्तु वहदेव गिरामें होने के कारण सर्वजन ग्राह्य नहीं है उसी ग्रन्थ को श्रीयुगल रहस्य माधुरी विलास नामक प्रस्तुत पुस्तक में सरस छन्दों में हिन्दी पद्यानुवाद परम रसिक सन्त श्री "सीताशरण" जी ने ४ भागों में करके प्रकाशित कराया है, मैंने इस तृतीय भाग का अवलोकन किया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इनके अथक परिश्रम एवं लगन के फल स्वरूप में अनन्त भावुक रसिक भक्त अपने लक्ष्यमें अग्रसर होकर अपने मानव जीवन को सफल बनाएगें।

हरिनामदास "वेदान्ती"
श्रीरामवल्लभा कुञ्ज, श्रीजानकीघाट
श्रीअवधधाम

❋ विनम्र निवेदन ❋

करुणा वरुणालय प्रिया प्रीतम श्रीसीतारामजी की अहैतुकी कृपा से "श्री युगल रहस्य माधुरी विलास" का तृतीय भाग रसिक महानुभावों के समक्ष प्रकाशित होकर आ रहा है। इस भाग में ८ से लेकर १२ अध्यायों का प्रकाशन है। आठवें अध्याय में श्रीमैथिली जू के बिबाह के पश्चात् श्री ब्रह्मा जी की आज्ञा से विश्वकर्मा ने श्री अवध में आकर अनेक महल मन्दिर कुन्ज निकुन्ज विविध प्रकार के वाग वाटिका कूप सरोवर झरना आदि सब दिव्य उपकरण तैयार किये जो स्वयं प्रकाशमान होते थे। श्रीचक्रवर्ति दशरथ जी महाराज एवं माताओं तथा बृद्ध जनों की आज्ञा में सपरिकर प्रिया प्रीतम शुभ दिन शुभ मूहूर्त में ब्राह्मण गुरु जनों का पूजनकर उन दिव्य महलों में प्रवेश कर नाना प्रकार विहार करने लगे, उसी समय श्रीभरत आदि भाइयोंने महती सेना के साथ दिशाओं विदिशाओं में यात्राकर अनेक विमुख महिपालों को जीत कर श्रीराम सन्मुख करके उनसे कर लेकर प्रसन्नता पूर्वक श्री अवध आये। विश्वकर्मा विरचित दिव्य महलों में प्रिया प्रीतम जू का पारस्परिक प्रेम व्यवहार वर्णन एवं अनेक देव गन्धर्व किन्नर नाग पन्नग राजकन्यायों के साथ विविध विहार कर सब को परमानन्द प्रदान किया। श्री मैथिली जू ने जिन सखियों को अपनाया था उनका नाम एवं गोत्रादि का परिचय देकर प्रीतम जू के चरणों में अर्पण किया। तदन्तर प्रिया जू ने प्रीतम जू से निवेदन किया कि—हे प्राणनाथ जू मैंने सुना है कि आपको अनेक परम सुन्दरी गोपकन्या देवकन्या राजकन्यायें प्राप्त हुई हैं। जिनके साथ आपने रास क्रीड़ा की है, अतः यदि आपको संकोच नहीं हो तो उन सभी कन्यायों को मेरे समक्ष उपस्थित कर के रास क्रीड़ा दिखलाने की कृपा करें। प्रीतम जू ने उन सभी

कन्याओं को बुलाकर प्रिया जू के अर्पण कर कहा कि– ये सब आपकी दासी हैं, प्रिया जू ने उन्हें सखी रूप में स्वीकार किया। श्री प्रिया जू की सखियों ने प्रीतम जू की तथा प्रीतम जू की सखियों ने प्रिया जू की प्रशंसा की। श्री प्रिया जू की रुचि पर प्रीतम जू की आज्ञा से गोपकन्यायों ने रास क्रीड़ा कर दम्पति को परम अह्लाद प्रदान किया, नववें अध्याय में देवकन्याओं के रास का प्रसंग का विशद वर्णन है। दशवें अध्याय में श्री प्रिया जू समेत सभी सखियों ने रामाराधन किया। प्रीतम जू के अन्तर्द्धान हो जाने पर एक माह तक कठोर व्रत पूर्वक साधना करने पर प्रीतम जू सखी रूप में प्रगट होकर प्रिया जू के गले लपट कर अपने रूप में प्रगट हुये।

एकादशवें अध्याय में गन्धर्व कन्याओं के रास का प्रसंग वर्णन है, इस अध्यायमें गन्धर्व कन्याओं ने श्रीराम रास में अनेक प्रकार के संगीत प्रगट किये। छवो राग छत्तीसों रागिनी तथा उनके भेद ताल स्वर अक्षरों का विशद विवेचन है द्वादशवें अध्याय में किन्नर कन्यायों के द्वारा किया गया रास का प्रसंग है। इन कन्याओं का रास अद्‌भुत रूपमें द्रष्टव्य है, जिसका स्वाद पढ़ने वाले महानुभावों को ही प्राप्त होगा, रसिक महानुभावों से प्रार्थना है कि प्रकाशन में बहुत त्रुटियाँ हैं। उनको सुधार कर अपनी बस्तु का रसास्वादन किया जाये।

रसिकों का अनुरगामी–

"सीताशरण"

श्री तु० सा० प्र० मंडल श्रीरामकोट

श्री अवधधाम।

✻ विषय अनुक्रमणिका ✻

दशवाँ अध्याय—

एकादशोऽध्याय—

द्वादशोऽध्याय—

* अष्टमोऽध्यायः *

श्री युगल रहस्य माधुरी विलास

बिवाहोत्तर रहस्य प्रकरणम्

रोला छन्द—

बदत बिमल बर बचन सूत अतिसय रस पागे।
परमानन्द प्रबाह प्रीति पर बश अनुरागे॥ १॥
सुनहु सकल मुनि बृन्द बुद्धि मन चित एकाग्र कर।
राम नाम अभिराम रास रसिया उदार तर॥ २॥
रसिकेश्वर रस रूप अमल आनन्द कन्द वर।
परब्रह्म परमीश परम प्रतिभा प्रकाश कर॥ ३॥
परम तत्त्व गति परम प्रकाशक परम मधुर तर।
"सीताशरण" सनेह शील सुख निधि सुषमा कर॥ ४॥
तिन के नवल चरित्र परम पावन अघ हारी।
उत्तम ललित रहस्य कहौं निज मति अनुसारी॥ ५॥
जाहि सुनन के बाद सुधा हू व्यर्थ जनावै।
अमृत पान जो करै तुरत तेहि अमर बनावै॥ ६॥
सुधा माहिं गुण यही एक पर यह रहस्य वर।
जो कोइ पियै सनेह सहित तेहि अमृत तुच्छ तर॥ ७॥
कोटि सुधा ते सरस सुखद सुठि स्वाद भरित वर।
जानै "सीताशरण" पियै जो सतत मुदित उर॥ ८॥

वाहि अमर गण तुच्छ लगत सब भोग रोग सम।
त्यागि सकल जग आश त्रास पीवत रस अनुपम ॥ ९ ॥
सरस्वती तट निकट नित्य हरि रूप समाधी।
मगन रहत तेहि माहिं सतत सब भाँति अबाधी ॥१०॥
आगम निगम पुराण सुमृति संहिता ग्रन्थ वर।
सबके विज्ञ रसज्ञ परम वक्ता उदार तर ॥११॥
मुनिवर परम प्रवीण पराशर तस्य आत्मज।
श्रीमद्व्यास सुजान प्रेम पूरित मुख पंकज ॥१२॥
मेरे श्री गुरुदेव कृपा करि मोहिं सुनायो।
जिनकी करुण कलित पाय मम हिय हुलसायो ॥१३॥
पायो परमानन्द सरस सुख स्वाद अपारा।
सावधान हो सुनिय कहौं मैं मति अनुसारा ॥१४॥
जब मैथिली समेत अमित मन्मथ मद मर्दन।
श्री कौशल्यानन्द कन्द रस रास विवर्धन ॥१५॥
आये अवध मझार मुख्य निज महल विराजे।
परिकर गण मन मुदित सौज सेवा को साजे ॥१६॥
प्रिय परिजन परिवार सकल पुर के नर नारी।
लहि रघुनन्दन दर्श भये मन परम सुखारी ॥१७॥
सन्तोषित करि सबहिं प्रेम पालक सब लायक।
करुणासिन्धु उदार सतत सज्जन सुखदायक ॥१८॥
रघुनन्दन रसिकेश हृदय बिच कीन बिचारा।
मम क्रीड़ा के योग्य भवन विरचें विस्तारा ॥१९॥

सुठि सुन्दर सम्पन्न सौज सब साज सुखद वर।
भवन विशाल रसाल प्रकाशित परम कान्ति कर ॥२०॥
मम निवास के योग्य परम सन्तोष प्रदायक।
बहु प्रकार बिस्तार सकल परिकर सुखदायक ॥२१॥
बिपुल बाटिका बाग बेलि वर बृक्ष सुमन हर।
सुर पादप कमनीय परम रमणीय सघन तर।२२॥
तिन मधि सदन अनेक मनोहर सब सुपास युत।
बने बिहार सुयोग्य रत्न पर्वत अति अद्भुत ॥२३॥
बिपुल काल पर्यन्त जहाँ हम करैं रमण नित।
प्राण प्रिया के संग रंग रँगे मुदित चित ॥२४॥
श्री मिथिलाधिप लली मैथिली अति सुकुमारी।
श्यामावय सम्पन्न रूप निधि मम अनुहारी ॥२५॥
सब बिधि मम अनुकूल एक रस सतत सयानी।
परम पवित्र चरित्र शील गुण निधि छबि खानी ॥२६॥
सकल भाँति मम सद्दश न्युनता रंचक नाहीं।
प्राणाधिक प्रिय मोहिं रमत नितमम सँग माहीं ॥२७॥
अपर देव महिपाल नाग नर किन्नर बाला।
गोप सुता मन रमण नायिका नवल रसाला ॥२८॥
परम सुन्दरीं सकल प्रथम ही मैने पाईं।
दियो सबहिं सुख स्वाद आपने रंग रँगाईं ॥२९॥
अब मो कहँ अस उचित करौं क्रीड़ा कमनीया।
देउँ सबनि अति मोद भामिनी सब रमणीया ॥३०॥

निज गुण गण बश करौं सकल पुरजन नर नारी ।
देश निबासी सबनि करौं सब भाँति सुखारी ॥३१॥
मुझ में अति अनुराग होय नित नव सुख पावै ।
मेरी प्रजा पवित्र परम प्रिय मोद बढ़ावै ॥३२॥
मेरे माता पिता निरखि मम छबि बलि जावैं ।
सुनि मम कीरति कलित सतत मन में सुख पावैं ॥३३॥
जग पालक एक धर्म दिनहिं दिन अधिक बढ़ावैं ।
"सीताशरण" सनेह सने सुर गुण गण गावैं ॥३४॥
सकल लोक अभिराम होउँ निज शील सुभाऊ ।
आकर्षौं निज ओर सबनि छोड़ौं नहिं काऊ ॥३५॥
शुचि आचरण दिखाय सबहिं अति करौं सुखारी ।
मम लीला अति सरस होय सज्जन हित कारी ॥३६॥
ज़िन को मन अति शुद्ध वही जन आनँद पावैं ।
तिन के हिय मैं बशौं सतत जो मम गुण गावैं ॥३७॥
करि अस बिमल चरित्र राम यह नाम सुहावन ।
करौं सार्थक याहि रचौं लीला मन भावन ॥३८॥
जो सब में करि रमण सबहिं निज संग रमावै ।
बाको "सीताशरण" शास्त्र श्रुति राम बतावै ॥३९॥
याते मधुर चरित्र करौं मैं परम रसाला ।
सब को सुखद पवित्र हृदय सोचत रघुलाला ॥४०॥
चक्रवर्ति अवधेश सुवन रघुकुल मणि रघुवर ।
निज मन में संकल्प सुदृढ़ जब कीन मोद भर ॥४१॥

तुरत सकल जग सृजन हार बिधि हृदय बिचारी।
शिल्प कला कल कुशल बुलायो परम सुखारी ॥४२॥
गयो बिधाता निकट विश्वकर्मा हर्षाई।
करि बंदन पद कंज मंजु बैठो शिरनाई ॥४३॥
तब बिधि आज्ञा दई जाहु तुम अवध मझारी।
बिरचौ बिबिधि बिहार योग्य वर महल अटारी ॥४४॥
विपुल वाटिका बाग बिटप वर बेलि बिताना।
बापी कूप तड़ाग सरित गिरि सर बिधि नाना ॥४५॥
स्वर्ण रत्न मणि रचित खचित बहु भवन सुहावन।
कुंज निकुंज अनेक अमल अद्भुत मन भावन ॥४६॥
स्वयं प्रकाश स्वरूप सुखद सब ऋतु सब काला।
गुप्त प्रकट बहु भाँति मोद प्रद परम रसाला ॥४७॥
श्री रघुवीर बिहार योग्य रासास्थल मन हर।
शिल्प कर्म अति कुशल तात तुम हिय उमंग भर ॥४८॥
बेगि जाहु भू लोक अवध पुर सरयू तट पर।
जीव लोक के चन्द्र राम सब भाँति चतुर वर ॥४९॥
सुषमागार उदार चरित जिन को सुख दाई।
तिन से रक्षित अवध परम विस्त्रित छबि छाई ॥५०॥

निरखि सुखद वर धाम हृदय अति आनँद पायो ।
निज सौभाग्य सराहि कार्य प्रारंभ करायो ॥५३॥
जस बिधि आज्ञा दई रचे तस भवन अनेका ।
मन्दिर महल अनूप रुचिर एकन ते एका ॥५४॥
विपुल वाटिका बाग सकल सौन्दर्य निधाना ।
बिबुध विटप वर बेलि मनोहर तने बिताना ॥५५॥
रघुवर मन अनुकूल सकल सुठि सुन्दर रचना ।
अद्भुत अमल अनूप कहैं कवि किमि नित बचना ॥५६॥
निशि भर में सब बिरचि गयो बिधि भवन सिधाई ।
प्रात काल इत उठे अवध बासी सुख पाई ॥५७॥
मन्दिर महल अनेक निरखि अनुपम मन हारी ।
यह रचना केहि रची परस्पर कहत सुखारी ॥५८॥
मानव की सामर्थ कहाँ अस कला दिखावै ।
यामें श्री रघुनाथ केर कर्त्तव्य जनावै ॥५९॥
दिव्य रत्न मणि रंजित निरखि वर भवन सुहाये ।
चक्रवर्ति महराज विपुल वर बृद्ध बुलाये ॥६०॥
श्री कौशल्या आदि मातु मन परम सुखारी ।
सब ने कीन बिचार महल मंजुल मन हारी ।६१॥
रघुनन्दनहिं बुलाय दीन आज्ञा हर्षाई ।
इन मधि करिय बिहार लाल स्वच्छन्द सदाई ॥६२॥
गुरुजन आयसु मानि राम रघुवंश विभाकर ।
शुभ दिन सोधि सनेह सहित हिय परम मोद भर ॥६३॥

पूजि विप्र पद कंज दान दीनों सुख पाई ।
मुनि जन गुरु पद बन्दि मुदित मन श्री रघुराई ॥६४॥
निज प्रिय परिकर सहित प्रेम पालक रघुनन्दन ।
सादर कियो प्रवेश श्याम सुन्दर जग बन्दन ॥६५॥
जब प्रबिशे रघुवीर संग नायिका नवीनी ।
मृग नयनी पिक वयनि कला कुशला रस भीनी ॥६६॥
तिनहिं देन सुख स्वाद हेत सुर बिटप दिव्य तर ।
पारिजात मन्दार अपर संतान सुखद वर ॥६७॥
कल्प बृच्छ मन हरन सु तरु चम्पक मन भावन ।
पंच देव तरु स्वयं आय राजे अति पावन ॥६८॥
प्रीतम परम प्रवीण सबहिं भल भाँति बिचारी ।
स्थापित करि तिनहिं उचित स्थान मझारी ॥६९॥
पुनि अवधेश कुमार सकल प्रिय परिकर संगन ।
लागे करन बिहार रँगे अतिसय रस रँगन ॥७०॥
श्री भरतादिक बन्धु सबनि जब यह सुधि पाई ।
मेरे परम सुसेव्य प्रेम मूरति रघुराई ॥७१॥
निज प्रिय परिकर सहित करन हित नवल बिहारा ।
बिपुल मन्दिरन माहिं गये प्रभु परम उदारा ॥७२॥
तब सब बन्धु सुजान चहूँदिशि बिदिशि सिधाये ।
जे महीप प्रभु विमुख बाहु बल स्वबश बनाये ॥७३॥
जानत राम परत्व न जे तिन को लरि जीति ।
लै आये धन विपुल सिखाई तिन को नीती ॥७४॥

कारण प्रभु के बन्धु सकल मन की रुचि जानत ।
सोई सेवा करन माहिं हिय में सुख मानत ॥७५॥
प्रभु आयसु प्रति पाल करन को व्रत अपनायो ।
तजि जग के सुख स्वाद इन्द्रियन स्वबश बनायो ॥७६॥
श्री मैथिली प्रमोद पात्र रसिकेश सु छबि धर ।
संचय करि धन बिपुल प्रजा पालक उदार तर ॥७७॥
लोक पाल समुदाय सबनि ते अधिक महाना ।
भये परम ऐश्वर्य वान रघुवीर सुजाना ॥७८॥
यहू सूत को कहब महा माधुर्य भरित अति ।
जिनको "सीताशरण" गुनत ऐश्वर्य विमल मति ॥७९॥
जिनहिं बिपुल सुर सुता नाग कन्या समुदाई ।
मिलीं अमित गन्धर्व सुता सब भाँति सिहाई ॥८०॥
कोटिन नव नायिका रूप गुण शील उजारीं ।
पाईं बिना प्रयास राम अतिसय सुकुमारीं ॥८१॥
स्वयं परम ऐश्वर्य वान श्री राम रसिक वर ।
बन्दत "सीताशरण" चरण पंकज बिधि हरि हर ॥८२॥
जाकी भृकुटि बिलाश बनत ब्रह्माण्ड अनेका ।
रचना बिबिध प्रकार सकल एकन ते एका ॥८३॥
लोकपाल सम कहब तिनहिं कछु प्रभुता नाहीं ।
कहेउ सूत माधुर्य भाव भरि निज मन माहीं ॥८४॥
लोकपाल ही बड़े अहैं भू लोक मझारी ।
यहि ते "सीताशरण" सूत निज हृदय बिचारी ॥८५॥

प्रभु से उपमा दई हेतु दूसर कछु नाहीं ।
रघुवर परम परत्त्व प्रकाशित सब जग माहीं ॥८६॥
सकल अमानुष कर्म दिव्य गुण गण आगारा ।
श्री कौशल्या मातु सुमित्रा परम उदारा ॥८७॥
दया मयी कौशिला सुमित्रा साधु चरण रत ।
सब बिधि सेवा करत परम पावन प्रसन्न चित ॥८८॥
निर्मल मन कैकयी शुभाशा अम्ब सयानी ।
बुद्धि सु बृद्धा दत्त दिव्य गुण युत छबि खानी ॥८९॥
श्री स्वच्छा रोहिणी श्रेष्ठा अपर सु माता ।
सौख्य सु बृद्धा सकल अवध पति को सुख दाता ॥९०॥
ये सब परम प्रवीण धर्म सहयोग प्रदायक ।
चक्रवर्ति नृप केर महाँ रानी सब लायक ॥९१॥
रमणीयाँ कमनीय सकल पावन छबि खानी ।
भोग बिहार प्रवीण प्रेम पूरित सुख दानी ॥९२॥
परम श्रेष्ठ ये सकल और नृप के बहु रानी ।
रूप शील सुख खानि सरस चित परम सयानी ॥९३॥
सुषमागार उदार सतत आश्रित सुख दानी ।
सरल मृदुल सुठि भाव भरित छबि निधि गुण खानी ॥९४॥
श्री विदेहनन्दिनी मैथिली राज किशोरी ।
क्षमा मूर्ति अवनिजा सदा पिय प्रेम विभोरी ॥९५॥
पुत्र बधू अस पाय यत्न से सब महरानी ।
राखैं अधिक दुलार देहिं आशीश सुबानी ॥९६॥

हे कल्यानि सदैव पूज्य गुरु वर्ग चरण रत।
सासु ससुर के निकट नम्रता लहो भाव युत ॥९७॥
नित नव कीर्ति सुगंग बढ़ै सब लोकन माहीं।
सेवो निज प्रिय प्राण नाथ सुख सहित सदा हीं ॥।९८॥
यह अमृत फल सतत मिलै तुम को सब काला।
इमि सब माता देहिं सुआशिर्वाद रसाला ॥९९॥
यदा कदा वात्सल्य भाव भरि पिता उदारा।
"सीताशरण" बुलाय लेहिं करि कृपा अपारा ॥१००॥

दो०–सुनि आवत पितु ढ़िग तुरत, श्री रघुवर अति प्रेम।
बन्दन "सीताशरण" पद, पूछत हित सों क्षेम ॥ १ ॥

जस पितु आयसु होय राखि शिर श्री रघुनन्दन।
करत सु कार्य सनेह सहित समुचित जग वन्दन ॥ १ ॥
पुनः शीघ्र ही जात जहाँ मिथिलेश दुलारी।
निरखि विमल बिधु बदन हृदय मधि होत सुखारी ॥ २ ॥
श्री मैथिली पुनीत प्रेम पात्रा प्रिय वामा।
रघुवर प्राणाधार प्रीति वर्धक अभिरामा ॥ ३ ॥
तिन के पावन प्यार पगे प्रीतम प्रिय नागर।
रहत परम परतन्त्र रसिक लम्पट छबि सागर ॥ ४ ॥
प्रिया प्रीति रस रँगे श्याम सुन्दर मन भावन।
आकर्षित अति होत प्रेम पालक जग पावन ॥ ५ ॥
इमि श्रीराम सुजान देव पति इन्द्र सु दुर्लभ।
राज लच्मी पाय मैथिली सहित सु वल्लभ ॥ ६ ॥

नवल मन्दिरन माहिं दिव्य सुख स्वाद अपारा ।
मन हर प्रियन समेत लहत रघुवंश कुमारा ॥ ७ ॥
जग में नहिं कोइ शत्रु प्रिय सब रघुवर के ।
राखैं नित रुख सतत सकल मनहर छबि धर के ॥ ८ ॥
प्राणि मात्र को अभय दान दाता रघुनायक ।
परम उदार समर्थ कृपा सागर सब लायक ॥ ९ ॥
इमि सब को प्रिय राम श्याम सुन्दर सुषमाकर ।
श्री मैथिली सनेह सुधा साने निशि वासर ॥१०॥
क्षण-क्षण नव सौन्दर्य निरखि दृग तृप्ति न पावैं ।
अनमिष रसिक नरेश सु छबि लखि वलि-वलि जावैं ॥११॥
तिमि मैथिली सनेह सनी पिय मधुर सु मूरति ।
निरखैं अनमिष सतत बसावैं निज हिय सूरति ॥१२॥
दोउ की छबि दोउ लखत परस्पर तृप्ति न माने ।
यद्यपि "सीताशरण" रहत दोउ हिय अरुझाने ॥१३॥
पावत परमानन्द प्रेम पागे पिय प्यारी ।
लखि-लखि "सीताशरण" सखीं जावैं बलिहारी ॥१४॥
सर्व समय मैथिली प्राण पति को सत्कारहिं ।
देहिं सदा बहुमान सुछबि लखि त्रण दलि डारहिं ॥१५॥
निज मनहर सौन्दर्य सुधा से तृप्त करावैं ।
सब बिधि "सीताशरण" पियहिं रस स्वाद चखावैं ॥१६॥
स्नेह सिन्धु मतिमान् दयित प्रिय राम रसिक वर ।
निज हिय करत बिचार सतत अतिसय प्रमोद भर ॥१७॥

यह मेरी आतमा देह को जीवन दानी ।
निश्चय सुधा स्वरूप मैथिली सब सुख खानी ॥१८॥
श्री मिथिलाधिप लली हमारी प्राण पियारी ।
मम सु प्रेम स्थान परम रस रूप उजारी ॥१६॥
याते श्रीमद् व्यास कहत पति को सब काला ।
दृग करि यह व्रत सतत करन चाहिय प्रति पाला ॥२०॥
पत्नी को निज अर्ध अँग सम सब दिन मानै ।
मंगलमय शुभ कर्म धर्म तेहि आश्रित जानै ॥२१॥
बिन पत्नी के सुपति धर्म को नहिं अधिकारी ।
गृह जीवन में धर्म मूल समझो प्रिय नारी ॥२२॥
याते रसिक नरेश प्राण वल्लभ रघुनन्दन ।
पगे रहत मैथिली प्रेम निशि दिन सुख कन्दन ॥२३॥
अर्धांगिनि निज प्रिया परम प्रिय जनक दुलारी ।
उनके बिन नहिं करत धर्म कृत अवध बिहारी ॥२४॥
मंगलमय नव कृत्य बिना मैथिली न करहीं ।
निशिदिन "सीताशरण" माधुरी लखि सुख भरहीं ॥२५॥
येही हेतु बिशेष कदा श्री अवनि कुमारी ।
रघुनन्दन सम पुरुष सुना नहिं दृगन निहारी ॥२६॥
सतत एक रस अमल धर्म धुर अपर न कोई ।
कबहूँ "सीताशरण" भयो अब है नहिं होई ॥२७॥
याते श्री मैथिली सुमन कहिं अनत न जावै ।
लखि पिय रूप अनूप नवल नित अति सुख पावै ॥२८॥

यहि बिधि युगल किशोर परस्पर प्रेम समाने।
दोउ को "सीताशरण" सतत दोउ जीवन जाने ॥२६॥
एक दिवस श्री राम प्रथम संगृहित नागरी।
गोप नाग सुर सुता परम छबि युत उजागरी ॥३०॥
सादर सबहिं बुलाय मैथिली चरण छुवाये।
वंश नाम अरु गोत्र सबनि के स्वमुख सुनाये ॥३१॥
प्रेम विवर्धन हार आप कल कुशल सुजाना।
पाईं "सीताशरण" यथा सब चरित बखाना ॥३२॥
गहि सब को कर कंज प्रिया को अर्पण कीनी।
श्री मैथिली उदार प्रेमयुत अति हित चीनी ॥३३॥
करि सब को सत्कार आपनी सखी बनाई।
"सीताशरण" सु कुशल पूँछि रस रंग रँगाई ॥३४॥
पुनि पिय परम प्रवीण प्रीति पागे नृपनन्दन।
पशु पच्छी सब सु प्रिय बस्तु अर्पी रस रंजन ॥३५॥
देत प्रियै अति मान प्राण सम अति प्रिय जानी।
तब पुनि "सीताशरण" मुदित मैथिली सयानी ॥३६॥
सानी सरस सनेह सजन सुख हित हर्षाई।
बिपुल बिमल वर बाम बिहँसि मृदु बचन बुलाई ॥३७॥
जिन के धर्म सु कर्म कुशलता सेवा केरी।
जानहिं श्री मैथिली सकल सब भाँति घनेरी ॥३८॥
पूर्व जन्म से जिनहिं भली बिधि जनक दुलारी।
अपनाईं सब भाँति कृपा करि कीन सुखारी ॥३६॥

आत्म स्वामिनी सतत सिया को जो जिय जानै।
जिनको श्री मैथिली प्रेमयुत अति सनमानै ॥४०॥
उन सब के प्रिय नाम बंश अरु गोत्र बताये।
पिय पद कंजन माहिं अर्पि मन मोद बढ़ाये ॥४१॥
यह मेरी अंगजा कृपा पात्रा तव दासी।
दीजिय अति सुख स्वाद आप सब को सुख रासी ॥४२॥
जानै भली प्रकार हृदय मधि सिय सुकुमारी।
पति सेवा ही धर्म एक मानै प्रिय नारी ॥४३॥
सुर दुर्लभ गुण बिपुल नायिका यहि प्रगटावै।
"सीताशरण" सुजान सुपति तब अति सुख पावै ॥४४॥
अस निज हृदय बिचारि मैथिली मोद समेता।
पिय पद सेवा करैं स्वकर सर्वदा सचेता ॥४५॥
इमि बीतत शुभ समय कदा मिथिलेश दुलारी।
सुख आसन गतमान लसत लखि अवध बिहारी ॥४६॥
स्वर्ण रत्न मणि जड़ित ललित सिंहासन सोहै।
तामधि राजत श्याम सुँदर लखि मुनि मन मोहै ॥४७॥
तिनहिं देखि कुल पूज्य धार्मिक जनक किशोरी।
बोलीं बचन बिनीत मधुर मंजुल रस बोरी ॥४८॥
हे पिय परम प्रवीण प्रीति पालक सुख सागर।
नृपि किशोर चित रमण मृदुल मोहन नव नागर ॥४९॥
हे जीवन धन श्रवण सुनी मैंने यह बाता।
सुनिये रसिक नरेश सतत आश्रित सुख दाता ॥५०॥

नृत्य गीत वर वाद्य आदि सुख सम्पति सारी।
तुमने अनुभव कीन भली विधि राम बिहारी ॥५१॥
नृत्य गान संगीत ज्ञान के पूर्ण सु लच्छण।
तुम मधि सकल लखात सुनो हे परम बिचच्छण ॥५२॥
बहु बिहार अनुकूल शिल्पकारी तव तन में।
सब प्रकार से सहज बनी सोचो निज मन में ॥५३॥
उन मधि रास सु नाम परम कौतुक कमनीया।
केहि बिधि कियो कृपाल स्वजन रंजन रमणीया ॥५४॥
परम सु पावन नाम आपको राम मधुर तर।
सब को सुखद सनेह सुधा सागर प्रमोद घर ॥५५॥
राम शब्द को अर्थ सतत क्रीड़ा करवावै।
स्वयं सु क्रीड़ा करै सबनि सँग रमै रमावै ॥५६॥
यह तव नाम सु अर्थ सुनो हे प्राण अधारे।
रसिया रसिक उदार रसिक जीवन धन प्यारे ॥५७॥
यह कौतुक कमनीय आप निज परिकर संगा।
करि कराय हृदयेश रँगे तिन के रस रँगा ॥५८॥
सो अपार रस रास बार बहु तुम ने कीनो।
रमि रमाय परिकरन संग अनुपम सुख दीनो ॥५९॥
अत एव हे रघुवंश हंश अवतंश ज्ञान घन।
कहिये "सीताशरण" प्राण बल्लभ उदार मन ॥६०॥
हे प्रीतम हृदयेश चहौं देखन मैं सोई।
दीजिय मोहिं दिखाय जो कछु संकोच न होई ॥६१॥

कैसी वह कमनीय सरस क्रीड़ा मन हरनी ।
केहि बिधि कीनी आप बिपुल बनितन बश करनी ॥६२॥
नाहिन कछु आश्चर्य आप में हे मन भावन ।
अस को उत्तम बस्तु जगत में सुभग सुहावन ॥६३॥
देव सु पूजित कौन कर्म दुष्कर पिय तुम को ।
जो तुम नहिं करि सकल विदित बैभव सब हमको ॥६४॥
जग की उत्तम बस्तु सुकृत वर्धक शुभ कर्मा ।
शोभित तुम में होत सतत सब बिधि शुचि धर्मा ॥६५॥
हे शोभन तव चरित परम पावन प्रमोद कर ।
हे सुख सिन्धु उदार शील गुण खान मधुर तर ॥६६॥
लखै बिचार सु दृष्टि सुफल सब धर्म न केरो ।
निज सुधर्म गुण राशि देय सुख स्वाद घनेरो ॥६७॥
ऐसे परम पुनीत अमित गुण गण तव माहीं ।
श्रवण मात्र से सुखद होय सब दिन सब काहीं ॥६८॥
पर हे परम प्रवीण श्याम सुन्दर मन रंजन ।
प्रीतम सुषमागार कोह मद मार बिभंजन ॥६९॥
निज गुण रखत छिपाय करत जेहि जन पर दाया ।
प्रगटत वाके हृदय माझ निज गुण रघुराया ॥७०॥
जेहि से वे सर्वदा चरण मधि दृढ़ रति पावैं ।
लखैं सतत नव चरित विमल तव गुण गण गावैं ॥७१॥
जो वे सब नायिका भईं चरणाश्रित तुमरी ।
नृत्य वाद्य संगीत कला वारिधि गुण अगरी ॥७२॥

परम प्रवीण सनेह सदन सब कला कुशल अति ।
भाग्य सु भाजन कियो आप ने इनहिं विमल मति ॥७३॥
इन पर पूर्ण सु कृपा करी तुम ने जीवन धन ।
मैंने हूँ यह सुनी बात हे अति उदार मन ॥७४॥
हे प्रिय भक्ति सुभाव भरे जिनके अँग सारे ।
मध्य भाग अति शूक्ष्म हो रहे प्राण अधारे ॥७५॥
ये सव तब अति प्रियाँ परम सुषमा गुण आगरि ।
सकल सु विद्या विज्ञ प्रेम पूरित नव नागरि ॥७६॥
सज्जन चर्चित सतत गोपकुल मणि सम सारी ।
भूषण इव हत दोष परम शुचि सब सुकुमारी ॥७७॥
अपर विनम्र सनेह सिन्धु अति रूप उजारी ।
परम कान्ति तव सरिस गुणाकर देव कुमारी ॥७८॥
इनहिं करत अति प्यार आप हे रसिक सुजाना ।
निशिदिन "सीताशरण" करत जिन को गुन गाना ॥७९॥
पुण्य जन्म वर सुता नाग कन्या सुकुमारी ।
बहु किन्नर नर राज वंश नायिका अपारी ॥८०॥
जब तुम को अति प्रियाँ अहैं ये सकल कुमारी ।
तो मान्या अति हमहिं भगिनि सम परम पियारी ॥८१॥
तव पद सेवन माहिं हमहिं सहयोग प्रदानी ।
होंगी सब नागरी नेह बर्धक छबि खानी ॥८२॥
पिय तुम महिपति सुवन भुवन भूषन निदूषन ।
"सीताशरण" सनेह सिन्धु जन हित जनु दूषन ॥८३॥

अनायास ही मिलत रत्न भोक्तन सु रत्न वर ।
यह सब तुम्हरी योग्य सुनहु रसिकेश सु छबि धर ॥८४॥
इमि मैथिली पुनीत बचन सुनि श्री नृपनन्दन ।
अतिसय शीतल भये हृदय बिच आनँद कन्दन ॥८५॥
यथा पुरुष सन्तप्त कदा शीतल जल पावै ।
लहै परम सुख शान्ति शुष्कता निकट न आवै ॥८६॥
तिमि सिय के प्रिय बचन श्रवण करि अवध दुलारे ।
पाये परमानन्द हृदय मधि परम सुखारे ॥८७॥
सकल विश्व पर दया करन हारे रघुराई ।
बोले बचन सनेह सने कर गहि मुसुकाई ॥८८॥
हे चन्द्रानति प्रिये अहो अनघे सुख रूपा ।
कथन रावरो सत्य न कछु आश्चर्य निरूपा ॥८९॥
परम सुखद तव बचन रहित सब दोष बिकारा ।
वर्धक रास बिलाश मधुर तर मधुर उदारा ॥९०॥
कोटिन राजकुमार सु सेवित दिव्य सिंहासन ।
तापर मम वामांग आप राजित प्रसन्न मन ॥९१॥
यद्यपि बनिता बृन्द बिपुल मेरी पद दासी ।
सेवहिं सहित सनेह भरीं हिय परम हुलासी ॥९२॥
तद्यपि सिंहासनारूढ़ के योग्य न कोई ।
मेरे वाम सुअंग माहिं राजै अति जोई ॥९३॥
परम स्वतन्त्र स्वबस्तु स्वयं भोगै मन भाई ।
अथवा आनै देइ अपर बनिता न लखाई ॥९४॥

आत्म भोग्य को प्राप्त करै अस कोउ न स्वतन्त्रा।
तुम्हरी कृपा कटाक्ष लखैं यह सब परतन्त्रा ॥९५॥
बिनु तुम्हरी रुचि पाय प्रिया नहिं कोउ अस नारी।
करै करावै भोग सुनिय मम प्राण पियारी ॥९६॥
लखि दुख सुख प्रत्यक्ष होयं जो व्यग्र महाना।
तिन की चर्चा कौन कहैं जो परम सुजाना ॥९७॥
याते निश्चय भोग्य बस्तु कोइ भोगि न पावै।
तो कहिये केहि भाँति अपर को भोग करावै ॥९८॥
तब हे जीवन मूरि तुम्हीं इन सब की स्वामिनि।
करैं करावैं भोग सबनि मन अति अभिरामिनि ॥९९॥
तुम स्वतंत्र सब भाँति अपर नागरी बिपुल वर।
सब तुम्हरे आधीन रहैंगी रुख लखि तत्पर ॥१००॥
अतएव हे मैथिली अमित नायिकनि मझारी।
तुम्हरो सुयश उदार परम निर्मल सुख कारी ॥१०१॥
अन्य असंख्य सुबाम करैं तव चरित सु गाना।
याते हृदयेश्वरी अपर नहिं तुमहिं समाना ॥१०२॥
ये सबही सुर सुता नाग कन्यादिक प्यारी।
प्रथम हमहिं जो प्राप्त भईं सुन्दर वर नारी ॥१०३॥
इन सब की स्वामिनि तुम्हीं सब भाँति सयानी।
सबनि सर्वदा देव उचित आयशु निज मानी ॥१०४॥
तुम सब भाँति समर्थ सकल कृत सम्मत दानी।
मेरी जीवन मूरि भूरि सुख रस की खानी ॥१०५॥

जब यहि बिधि वर बचन श्याम सुन्दर रघुनन्दन।
बोले धैर्य बिचार सहित प्रमुदित सुख कन्दन ॥१०६॥
सुनि सब बामा बृन्द तरल वर दीर्घ सु नयनी।
श्री रघुवीर अनन्य प्रियां रमणी पिक वयनी ॥१०७॥
रूप उदार अपार हुतासन सरिस दीप्ति वर।
चाह्यो अन्य न पुरुष कदा मनहूँ में मुद भर ॥१०८॥
यथा अनल संसर्ग होत सब वस्तु जरावै।
ऊँच नीच शुभ अशुभ अशुचि शुचि भेद मिटावै ॥१०९॥
तथा इनहिं एक राम छोड़ि जो पुरुष महाना।
चाहैं "सीताशरण" होय किन अति बलवाना ॥११०॥

दो०—जो कुदृष्टि इन में करै, सो सब भाँति नशाय।
"सीताशरण" प्रभाव अस, को कवि कहे सुनाय ॥२॥

सो सब बाल रसाल बचन बोलीं कर जोरी।
हे मैथिली उदार अवनिजा राज किशोरी ॥ १ ॥
हम सब में वह शक्ति कहाँ स्पर्द्धा तुम से।
करैं कहो केहि भाँति बहुत अन्तर तुम हम से ॥ २ ॥
किंचित लावै भाव तुम्हारे सम हम सब तिय।
कहँ ऐसी सामर्थ हमनि में यह सोचिय जिय ॥ ३ ॥
हम सब की क्या कथा जगत में कोउ वर बामा।
आप समान न अन्य सतत आश्रित अभिरामा ॥ ४ ॥
श्री लक्ष्मणाग्रज लाल हमहिं मम पितु से लीन्हां।
पुनि तुम्हरे पद कंज मंजु की दासी कीन्हां ॥ ५ ॥

हम दासी स्वामिनी आप सब भाँति हमारी।
किमि बराबरी होय कहिय निज हृदय बिचारी॥ ६॥
केवल यह अधिकार हमहि पिय रहैं सुखारी।
प्रमुदित हृदय मझार सतत श्री अवध बिहारी॥ ७॥
यही हमहिं अति श्रेय यही कर्त्तव्य हमारो।
पिय पद सेवा करैं यही व्रत सुदृढ़ बिचारो॥ ८॥
जब सब सुख रस रासि मिले प्रीतम श्री रघुवर।
अखिल लोक अभिराम श्याम सुन्दर अति छबि धर॥ ९॥
अपर बस्तु से कहो हमहिं पुनि कौन प्रयोजन।
केवल पिय पद कमल सतत सेवैं प्रमुदित मन॥१०॥
हे सुकेशि हम सबहिं विधाता यही एक गति।
उत्तम निधि दै दीन कृपा कर परम बिमल मति॥११॥
भूमिपाल नृप सुवन भुवन भूषण मन रंजन।
हम सब के सर्वस्व सतत परिकर सुख कन्दन॥१२॥
प्राप्त हमहिं सब भाँति भये रसिकेश श्याम घन।
निज आश्रित दुख समन दहन त्रण सम उदार मन॥१३॥
यद्यपि दुर्लभ परम अन्य को राजकुँवर वर।
तदपि हमहिं सब भाँति सुलभ भे सुठि सनेह घर॥१४॥
अतः इनहिं परित्याग करन की रुचि मन माहीं।
कबहूँ भूलेउ स्वप्न माहिं हम सब को नाहीं॥१५॥
नायक प्रवर उदार रूप सुन्दर जग जेते।
सब के नृप पद प्राप्त इनहिं सो हमनि सचेते॥१६॥

करत प्यार बहु भाँति हस्तगत प्राप्त हमारे ।
जीवन प्राण अधार रसिक वर नृपति दुलारे ॥१७॥
हास खिलौना सरिस हमनि सब बिधि सुप्राप्त अति ।
परिहर "सीताशरण" नहिं चरण अन्य मोर गति ॥१८॥
जो पर पुरुष सुजान सतत त्रय देवन दुर्लभ ।
जानि सकौं नहिं हेतु भयो क्यों मोहिं अति सुलभ ॥१९॥
जब तक तुम्हरी प्राप्ति किये नाहिन हृदेश्वर ।
तब तक रहे उदास राजनन्दन रसिकेश्वर ॥२०॥
तब तक देह सु गेह युगल अति शून्य जनाई ।
अर्घ अंग सम आप मिलीं पिय को हर्षाई ॥२१॥
तुम्हरे बिना अनंग मनोरथ पिय के सूने ।
अब मिलि तुमहिं जनेश सुवन भे सब बिधि दूने ॥२२॥
पिय की जीवन मूरि मनोरथ दानि सयानी ।
सुरतरु सम प्राणेश तिनहिं सुख प्रद छबिखानी ॥२३॥
सब बिधि तुम मैथिली मोद मन्दिर मन हरनी ।
पियको परमानन्द दानि अनुपम शुचि करनी ॥२४॥
सर्वलोक पति अवध नृपति नन्दन मन रंजन ।
श्री रघुवीर उदार प्रीति वर्धक दुख भंजन ॥२५॥
इनको आसन तुमहिं पाय अब भयो पूर्ण अति ।
हम सब को सुखदान परम सर्वदा एक गति ॥२६॥
पुनि हे श्री मैथिली प्रथम हम को एक लाभा ।
प्रीतम रहे सु प्राप्त मिलीं तुम उनकी आभा ॥२७॥

अब तुम्हरी लहि कृपा भये दो लाभ हमारे ।
यदि कबहूँ अति कोप करहिं अवधेश दुलारे ॥२८॥
तो तुम करि अति कृपा मोर अपराध छमा करि ।
पिय को कोप मिलाय परम सुख स्वाद हृदय भरि ॥२९॥
यह हम को दो लाभ भये श्री राजकिशोरी ।
"सीताशरण" निहाल रहौं निशिदिन लखि जोरी ॥३०॥
सकल दोष दुख रहित छमा मय तव मृदु मूरति ।
करुणा कृपा सुशील मयी नित नवल सु सूरति ॥३१॥
ऐसी परम उदार आप की शरण भईं हम ।
यह तव कृपा प्रसाद लहेउ अतिसय सुख अनुपम ॥३२॥
यदि कहिये रसिकेश नृपति मणि अवध दुलारे ।
चक्रवर्ति नृप तनय भुवन भूषन सुकुमारे ॥३३॥
परम स्वतन्त्र सदैव हमारी बात न माने ।
अपनावैं तुम सबहिं चहे त्यागें का जाने ॥३४॥
मानै विनय न मोर करब हम कौन उपाई ।
तो सुनिये मम बचन कहौं मैं सत्य दृढ़ाई ॥३५॥
ऐसा कभी न होय सत्य यह बयन हमारे ।
यद्यपि जीवन प्राण रसिक वर रूप उजारे ॥३६॥
चक्रवर्ति नृप सुवन अखिल अवनीश मुकुट मनि ।
परम स्वतन्त्र तथापि अहैं हम सबहू अति धनि ॥३७॥
सुर दुर्लभ त्रयलोक मध्य अनुपम वर बामा ।
सकल कला सम्पन्न परम मन हरन ललामा ॥३८॥

विपुल नवल नागरीं इनहिं त्यागें जीवन धन ।
कहँ इनमें यह शक्ति कहाँ दृढ़ता इतनी मन ॥३९॥
अपर हेतु यह प्रबल सुनो हे राजदुलारी ।
राज भवन में लसत नहीं कैसेउ एक नारी ॥४०॥
जेहि नृप के तिय एक ताहि भय की अतिशंका ।
कदा अभय नहिं होइ कबहु नहिं होय निशंका ॥४१॥
जासु भवन में एक सुतिय तेहि एकै जानो ।
विबिधि भाँति सुखस्वाद लहै किमि मन अनुमानो ॥४२॥
अस्तु उचित यह वाहि राज तजि बन में जावै ।
करि साधन समुदाय स्वयं परलोक बनावै ॥४३॥
युवा अवस्था पाय पुरुष मदि मन हर नारी ।
संग करे नहिं भोग सुनो हे राजकुमारी ॥४४॥
विविधि भोग सुख स्वाद सकल इन्द्रिन आरामा ।
भोगत हू सब निरस लगें बिन सुन्दर वामा ॥४५॥
पावै जो नहिं पुरुष अर्थ अरु धर्म काम तजि ।
सेवै शुभ अपवर्ग पन्थ पावन प्रभु पद भजि ॥४६॥
पाये विन बिधु बदनि अर्थ अरु धर्म काम सुख ।
जो नर सेवन करन चहै सो लहे सतत दुख ॥४७॥
सो अपवर्ग सुपंथ विमुख अपने जिय जानो ।
ललित स्वकीया नारि बिना किमि सुख अनुमानो ॥४८॥
सरस स्वकीया संग धर्म युत अर्थ सु कामा ।
जो नर सेवन करै लहै सन्तत अभिरामा ॥४९॥

सो नाहिन अपवर्ग विमुख जो सत पथ सेवत ।
पालत नीति सु प्रीति रीति शुचि रति रस लेवत ॥५०॥
जो मानव वर बाम बिमल बिधु बदनी तजि के ।
नहिं सेवत अपवर्ग सतत श्री हरि पद भजि के ॥५१॥
सो निश्चय अपवर्ग विमुख जानिय जिय माहीं ।
याते "सीताशरण" त्यागि हरिपद गति नाहीं ॥५२॥
सकल भोग समुदाय विपुल वर बाम रसाला ।
भोगन भोग्य जनेश सुवन प्राणेश कृपाला ॥५३॥
युवा अवस्था युक्त सतत सौभाग्य मान पिय ।
सुन्दरता रस सिन्धु सुतिय मनहरन सुखद हिय ॥५४॥
युवा अवस्था पाय कुरूपौ सुन्दर लागत ।
श्री राजेन्द्र कुमार सु छबि लखि मन्मथ लाजत ॥५५॥
सदा किशोर लखात प्रेम पालक हृदयेश्वर ।
याते "सीताशरण" योग्य सब बिधि रसिकेश्वर ॥५६॥
अतः त्यागि बनितादि भोग वर बिपुल बिहारा ।
केवल इक अपवर्ग लागि श्रम सहैं अपारा ॥५७॥
जो पै नृपति कुमार उचित इनको यह नाहीं ।
सर्वलोक पति सुवन विचारैं निज मन माहीं ॥५८॥
यदि बनितादिक भोग करैं स्वीकार न रघुवर ।
तो वर बामा प्रेम पात्र रसिकेश सु छबि धर ॥५९॥
प्रीतम परम प्रवीण रास रस रमण रँगीले ।
रसिकन रस दातार रूप गुण गण गर्बीले ॥६०॥

विदित सु विद्वुत बृन्द वेद वर विज्ञ सुजाना ।
सज्जन सरस समाज विमल मति मान महाना ॥६१॥
तिन मधि इनकी कथा परम पावन सुख दाई ।
अतिसय शोभा लहति सतत अविचल पद पाई ॥६२॥
बिन सेये रस राज होय निन्दित अस जानो ।
सुनि मेरे यह वैन आप हू हिय अनुमानो ॥६३॥
यह सब साज समाज बिपुल वर भोग रसाला ।
नवल नायिका बृन्द सकल बिधु बदनी बाला ॥६४॥
सेवन करैं जनेश सुवन श्रृँगार सार रस ।
सब को बढ़ै महत्व लहैं प्रीतम हू अति यश ॥६५॥
केवल सुख के साज सकल रघुवर को पाई ।
विलसत विसद विशेष जगतमधि होत बड़ाई ॥६६॥
यदि तन कृत बहु क्लेश धर्म उत्तम कहलावै ।
श्रेष्ठ सुखों का साज सकल बिधि माना जावै ॥६७॥
तो फिर क्षत्री वंश विहित उत्कृष्ट दान की ।
महिमा होगी कौन अतिथि सत्कार मान की ॥६८॥
तन कृत तप अरु दान युगल मिलि सुख के साजा ।
अतएव राजकिशोर आप सेइय रसराजा ॥६९॥
दीजै दान महान परम अधिकारी पाई ।
हे रसिकेश उदार राजनन्दन रघुराई ॥७०॥
देव नाग कन्निकन केर सुनि अति मृदु बानी ।
परम पुनीत प्रतीति प्रीति अतिसय रस सानी ॥७१॥

सुनि मिथिलाधिप लली केर अनुगामिनि बाला।
बोलीं बचन सुनाय पिया को परम रसाला।।७२।।
हे पिय परम प्रवीण प्रीति पालक प्राणेश्वर।
कीन अनेकन बाल समर्पित तुमहिं महेश्वर।।७३।।
जगत पितामहँ तुमहिं अमित नायिका नवीनी।
रूप शील गुण खानि दईं छबि निधि रस भीनी।।७४।।
सुर गण हो मन मुदित सबनि ने निज-निज बाला।
दीनी सादर तुमहिं रूप गुण निधि छबि जाला।।७५।।
वे सब नव नागरी नवल नागर तव संगा।
सादर रहीं बिराज पगीं अतिसय रस रंगा।।७६।।
पूर्व पुण्य के पुँज पाय तव कृपा विशाला।
भानु वंश अवतंश भानु इव रूप रसाला।।७७।।
नायक नवल किशोर युवावस्था सम्पन्ना।
चक्रवर्ति कुल कमल प्रकाशक सुखद प्रपन्ना।।७८।।
निकर कामिनिन हृदय परम सुख स्वाद प्रदायक।
अमित अनंग समान मधुर मन हर सब लायक।।७९।।
आप अमल आनन्द कन्द इन सब ने पाये।
ये सब तुम्हरी प्रियां आप पति भये सुहाये।।८०।।
अहो लोक पति सुवन भुवन भूषन जन रंजन।
परम समर्थ उदार प्रीति वर्धक मद गंजन।।८१।।
सब वर बामन मध्य आप की प्राण अधारी।
विलसत विसद विशेष मैथिली जनक दुलारी।।८२।।

सर्वेश्वरी उदार नाथ सँग परम स्वतन्त्रा ।
करैं विनोद बिहार रहैं सब सखि परतन्त्रा ॥८३॥
यद्यपि बामा बिपुल रूप गुण शील उजारी ।
तदपि एक अवनिजा बिबश रस रास बिहारी ॥८४॥
ये सब की स्वामिनी सकल इनकी अनुगामिनि ।
इनकी कृपा कटाक्ष पाय तुम को अभिरामिनि ॥८५॥
जिन ने करि अति कृपा आप से हमनि मिलाई ।
अति कल्याण स्वरूप समागम उचित कराई ॥८६॥
दियो परम सुख स्वाद सकल दुख द्वन्द मिटाई ।
हे राजेन्द्र कुमार प्रेम पूरक रघुराई । ८७॥
सिवा तुम्हारे अपर समागम अनुचित सारे ।
सकल अमंगल रूप सत्य यह बचन हमारे ॥८८॥
अरु हे पिय चित चोर चतुर चूड़ामणि छबि धर ।
सुनि मन करिय बिचार राजनन्दन उदार तर ॥८९॥
श्री मैथिली पुनीत चरण पंकज अनुरागिनि ।
सेवहिं बाला बृन्द तिनहिं जानिये बड़ भागिनी ॥९०॥
जग में विपुल महीप प्रभाकर सरिस प्रकाशक ।
परम उदार प्रतापवान निज सुयश विकाशक ॥९१॥
तिन सब की वर बाल बिपुल गुनशील उजारी ।
अंग कान्ति कमनीय दीप्ति दश दिशि बिस्तारी ॥९२॥
नवल नायिका बृन्द केलि क्रीड़ा विलाश कर ।
सिय पद प्रेम अनन्य अमल अनवद्य मोद घर ॥९३॥

सनातनी तव प्रियाँ प्रेम पूरित सब बाला।
छिद्ररहित नागरी रूप गुण निधि छबि जाला ॥९४॥
जिनहिं मैथिली चरण कमल ही की एक आशा।
मन न अपर दिशि जात जगत से भईं निराशा ॥९५॥
हे महीपमणि मुकुट राजनन्दन सब लायक।
प्रीतम परम प्रवीण प्रेम परतीति प्रदायक ॥९६॥
बिना मैथिली कृपा भये अपने जिय जानिय।
निश्चय हम सब केर आप पति दुर्लभ मानिय ॥९७॥
हम सब को पति मिले आप रसिकेश सु छबि धर।
यह तो स्वामिनि कृपा भयो सम्बन्ध सुदृढ़ वर ॥९८॥
यह तो जानत आप स्वयं पर ब्रह्म अगोचर।
अविगत अकथ अपार अगुन अनवद्य कलाकर ॥९९॥
आप अमल आनन्द कन्द सच्चिदानन्द वर।
"सीताशरण" अधार दोष दुख हर उदार तर ॥१००॥

दो०-श्री मिथिलाधिप की लली, भईं स्वामिनी मोर।
चरण शरण हम सबहिं लख, कीन परम रस बोर ॥ ३ ॥

हम सब दासी बनी प्रिया निज सखी बनाई।
करि दृढ़ शुचि सम्बन्ध आप से दीन मिलाई ॥ १ ॥
उन हीं की अति कृपा अचल आनन्द प्रदायक।
स्वामी हम सब केर नित्य तुम सब विधि लायक ॥ २ ॥
सनकादिक अजशम्भु शेष शुक ध्यान न पावत।
आगम निगम पुराण नेति कहि जाको गावत ॥ ३ ॥

जो अनन्त अखिलेश अगोचर अगम कहायो ।
गुनशीला सिय कृपा सुगम बनि हिय लपटायो ॥ ४ ॥
जाकी कीरति कलित निगम दुर्लभ कहि गावत ।
गुनशीला मैथिली कृपा सो सखिन रिझावत ॥ ५ ॥
यदि कहिये हृदयेश प्रिया की परम बड़ाई ।
करतीं तजि संकोच मोर यश सकल भुलाई ॥ ६ ॥
तो सुनिये प्राणेश प्राणवल्लभ प्रिय नागर ।
रूप शील गुण धाम अमल अनुपम सुख सागर ॥ ७ ॥
हे जीवन धन लाल आत्म प्रिय रति रस रंजन ।
परम उदार समर्थ प्रेम पालक दुख भंजन ॥ ८ ॥
श्री विदेहनन्दिनी प्राण की प्राण हमारी ।
रूप शील गुण नाम आप से अति सुकुमारी ॥ ९ ॥
तव कुल से उत्तमा न यदि होतीं मम प्यारी ।
तो हम सखी समूह दासि गण हे धनुधारी ॥१०॥
अतिसय लज्जा भरीं परम संकोच समाई ।
रहतीं राजकिशोर निकट तव सतत डराई ॥११॥
जब मम जीवन मूरि कृपामयि राजकिशोरी ।
सकल भाँति उत्तमा आप से रूप उजोरी ॥१२॥
तब हम क्यों सकुचायँ बताइय राजदुलारे ।
यद्यपि मम सर्वस्व आप हे प्राण अधारे ॥१३॥
यदि यों कहिये नाथ निगम आगम हम काहीं ।
जगत पिता जगदीश जगत पालक बतलाहीं ॥१४॥

इन सबको सुनि कथन श्रेष्ठ सिय से मोहिं मानो।
अधिक प्रिया से अहैं सतत हम अस जिय जानो ॥१५॥
तो सुनिये रसिकेश रास रसिया रस लम्पट।
रति रस विज्ञसु वीर धैर्य धारक उदार भट ॥१६॥
न्युनाधिक की बात न कछु यामे है प्यारे।
नवल नागरी बृन्द परम प्रिय राजदुलारे ॥१७॥
मह्यमान गुण सिन्धु महीयस नृपति मुकुट मनि।
लोकोत्तर सौन्दर्य मूर्ति मन हरन परम धनि ॥१८॥
सकल लोक अभिराम सकल जग पालन हारे।
परम समर्थ उदार यदपि सब को अति प्यारे ॥१९॥
क्या हम सब के सहित सकल जग जीव चराचर।
पालन में न समर्थ मैथिली सुख सनेह घर ॥२०॥
अवश्यमेव समर्थ सकल विधि राजकिशोरी।
जासु छटा लखि लजहिं रमापति उमा करोरी ॥२१॥
परम महान सु दानि लोक रंजक सुख दायक।
कृपा सदन रति रमन रास मण्डल सब लायक ॥२२॥
हम सब सहित समस्त चराचर जीवन काहीं।
सुखद हर्ष प्रद बस्तु सुनिय देखिय मन माहीं ॥२३॥
है यह लीला भूमि मध्य जो कुछ रघुनन्दन।
रावरि यह मैथिली केर सोचिय जग वन्दन ॥२४॥
जानिय वाहि अभिन्न रूप एक गुनिमन माहीं।
जिमि तुम परम अभिन्न सतत युग रूप दिखाहीं ॥२५॥

प्रीतम प्रिया अभिन्न भिन्न दर्शत सब काला ।
पूजत निज पद पद्म प्रेम पगि हम नव बाला ॥२६॥
यावत तुम दोउ केर बस्तु सब को सुख दायक ।
परम हर्ष प्रद सबहिं सकल कल्याण विधायक ॥२७॥
अतिसय प्रेमावेश यथा दोउ एक जनावैं ।
तदपि भिन्न दोउ रहत सखिन मन मोद बढ़ावैं ॥२८॥
किन्तु अहो हे कान्त कान्ति कमनीय कलाकर ।
कामिनी केलि कलोल कुशल कल कमल विभाकर ॥२९॥
रति रस रमण सुविज्ञ तियन की अन्तिम जो गति ।
मनकी जानन हार प्राण प्रीतम उदार मति ॥३०॥
हम सब के मन केर यही दृढ़ता है प्यारे ।
तुम दोउ हो एक रूप मैथिली युत नृप वारे ॥३१॥
लोक वेद सब भाँति आप दोउ एक स्वरूपा ।
दायक सुठि कल्याण अखिल आनन्द अनूपा ॥३२॥
हे प्रीतम चितचोर चतुर्चूड़ामणि छबि धर ।
यही विमल विज्ञान हमनि को अति प्रमोद कर ॥३३॥
जो सिय स्वामिनि सहित आप को एकै मानै ।
द्वैत भाव जिय तजै रूप आपन पहिचानै ॥३४॥
यही ज्ञान सब काहिं अखिल कल्याण प्रदायक ।
जीवन प्राण अधार रसिक वल्लभ सब लायक ॥३५॥
यदि कहिये हृदयेश सकल समर्थ हम आहीं ।
जो चाहिय सो रत्न लेहुँ प्रमुदित मन माहीं ॥३६॥

तो सुनिये रसिकेश श्याम सुन्दर रघुनन्दन।
राजकिशोर रसज्ञ रास रसिया जगवन्दन ॥३७॥
जे जन्मे नृप वंश माहिं गज रथ हय ताको।
सुलभ अहैं सब भाँति नहीं दुर्लभ कछु वाको ॥३८॥
वैभव विपुल विशेष रहत नित वाके संगा।
याते देवें आप लेहिं हम कवन प्रसंगा ॥३९॥
जो कछु दैइहैं आप मोहिं हे प्राण पियारे।
सो पुनि हम अर्पिहैं आप को परम सुखारे ॥४०॥
जब हम सब सब भाँति रावरी पद रज दासी।
परमानन्द समाय करैं निशि दिवस खवासी ॥४१॥
तब मैं अरु सब बस्तु मोर तुम्हरी निज प्यारे।
तुम दोउ सर्वस मोर मैथिली युत नृप वारे ॥४२॥
हे नरनाथ सु पुत्र प्रेम पालक प्रिय नायक।
उत्तम कुल मधि प्रगट सुभट सब बिधि सब लायक ॥४३॥
महाँ वली बहु बन्धु आप रणधीर धरम धुर।
सब बिधि पूरण काम परम अभिराम प्रभाकर ॥४४॥
अस मन में अनुमानि न तुम को स्वपति बनायो।
तुम्हरो रूप अनूप बिबस करि मोहिं फँसायो ॥४५॥
कोटि-कोटि कन्दर्प दर्प हर मधुर मनोहर।
रूप उदार अपार परम कर्षक सुषमाकर ॥४६॥
सुन्दरता की सीवं सरस माधुर्य सु मूरति।
निखिल कामिनी चित्त हरै निरखत तव सूरति ॥४७॥

रति रस रमण प्रवीण परम पोषक रस राजहिं ।
अस मैं निज मन सोंचि ग्रहण कीन्हों रघुराजहिं ॥४८॥
मन बुधि चित इन्द्रियन बिबश करि निज रस रंगा ।
सब विधि लेत रँगाय लाल तव रूप अभंगा ॥४९॥
अहो कृशोदर सौम्य भोग आश्रय सकुमारे ।
हे असीम सौभाग्य परम रस रूप उजारे ॥५०॥
हम सब बनितन काहिं रूप तव सर्वस प्यारे ।
अन्य न आश्रय मोर बिचारिय राजदुलारे ॥५१॥
पुनि हे कान्त प्रवीण समुझिये निज मन माहीं ।
यह सब वाला बृन्द प्रिया की वैभव आहीं ॥५२॥
ये विभूति सिय केर इन्हीं की कृपा कोरते ।
तुम पाईं बहु बाम विपुल बिधि चहूँ ओरते ॥५३॥
इनकी कृपा कटाच्छ पाय पिय तुम बड़ भागी ।
पूज्यनीय सब जगत माहिं भे रति रस पागी ॥५४॥
पिय तुम्हरे अतिरिक्त अपर भगवान कहावत ।
ते सब पूजत तुमहिं सतत तुम्हरे यश गावत ॥५५॥
ये अनन्त वर वाम मिलीं तुम को रघुनन्दन ।
केवल स्वामिनि कृपा कोर जानहु जगवन्दन ॥५६॥
इनहीं के सम्बन्ध पाय पिय जगत मझारी ।
तव कीरति कमनीय कीन अद्भुत बिस्तारी ॥५७॥
श्री विदेह योगीश नृपति मणि मुकुट कहावत ।
यह उनकी वर सुताशम्भु अज श्रीपति ध्यावत ॥५८॥

अपर बिपुल भगवान सतत इन को यश गाई।
ध्यावत चरण सरोज हृदय मधि नेह बढ़ाई ॥५९॥
धनु मख मिस हृदयेश आप को स्वपति बनायो।
तव कुल कीर्ति सु कमल कृपा करि स्वयं खिलायो ॥६०॥
रति रस लम्पट लाल काम शुभ यान तिहारो।
सो इनके पति भये तनक निज हृदय बिचारो ॥६१॥
इनने करि स्वीकार तुमहिं पति वहु यश दीना।
जीवन प्राण अधार हार निज हिय को कीना ॥६२॥
इनकी कृपा कटाक्ष बिना हे राजदुलारे।
किस गिनती में आप सत्य यह बचन हमारे ॥६३॥
येहि विधि विपुल विनोद भरे वर बचन नागरी।
बोलहिं प्रेम प्रमोद मगन रस निधि उजागरी ॥६४॥
व्यंग परम चातुर्य पूर्ण रचना मन हरनी।
सुनत रसिक शिरमौर प्रेम पूरित सुख करनी ॥६५॥
अपर यूथ हिय उमगि जाय प्रीतम के पासा।
चाहत करन विनोद सबनि मन परम हुलासा ॥६६॥
सँभाषण करि राम कुमर सँग आनँद पावैं।
विपुल नवल नायिका हृदय मधि चाह बढ़ावैं ॥६७॥
तबतक श्री मैथिली केर एक सुमुखि सयानी।
श्री सुभगा सहचरी सबहिं वर्जेउ मृदु बानी ॥६८॥
अभी रहौ तुम मौन सकल हम सब से रघुवर।
संभाषण करि लेहिं जबहिं जीभर श्री छविधर ॥६९॥

तब तुम सब मन मुदित पिया से बातैं करना।
दीजै सुठि सुख स्वाद हृदय में रति रस भरना ॥७०॥
पूर्व कथित सहचरी केर मुख से सिय गुन गन।
रूप परम लावण्य माधुरी रस मय सुनि मन ॥७१॥
मुदित भये हृदयेश प्राण वल्लभ उदार तर।
बचन परम ऐश्वर्य भरे अमृत मय सुख कर ॥७२॥
श्रवण पुटन करि पान प्राण जीवन धन प्यारे।
पावत परमानन्द राजनन्दन सुकुमारे ॥७३।
बाढ़ेउ विपुल उछाह हृदय में जब न अमायो।
तब तजि तट मर्याद सकल दिशि को उमड़ायो ॥७४॥
परमानन्द समुद्र अकथ अनुपम अथाह अति।
अमल अगाध अपार पार पावत न विमल मति ॥७५।
बनि उतावले लाल मधुर तर बचन अमोले।
सिय प्यारी से उमगि प्राण जीवन धन बोले ॥७६॥
अखिल लोक अभिराम श्याम सुन्दर सुशील तर।
रसनिधि परम उदार रूप सागर विनोद घर ॥७७॥
परम चतुर्ता सींवं महाँ माधुर्य मगन मन।
अरुण कमल दल नयन सु छबि पूरित चन्द्रानन ॥७८॥
नवल नायिकन मध्य विपुल बिधि क्रीड़न हारे।
ललना गण रमणीय दृगन हिय के शुचि तारे ॥७९॥
वंक भृकुटि वर बैन शैन दै हँसि रघुनन्दन।
बोले राजकिशोर रास रसिया जग वन्दन ॥८०॥

हे प्राणाधिक प्रिये देवि तव सहचरि नागरि।
तुम्हरेहिं वंश समान सकल ललना गुन आगरि ॥८१॥
शील स्वभाव सुधर्म आप सम सब में अहईं।
सकल कला सम्पन्न प्रेम पूरित सुख दाईं ॥८२॥
नृत्य वाद्य संगीत पण्डिता परम प्रवीना।
यद्यपि बाला बृन्द सबनि की वयस नवीना ॥८३॥
तदपि बचन चातुर्य्य मोहिं अति सय प्रिय लागै।
सुनत श्रवण सुख भृजत हृदय में रतिरस जागै ॥८४॥
हे मिथिलाधिप लली सकल तव सखी सयानी।
बचन चतुर्ता सिन्धु प्रेम पूरित छवि खानी ॥८५॥
यद्यपि तुम सर्वदा मोहिं प्राणन ते प्यारी।
सत्य-सत्य मम बचन मानिये राजदुलारी ॥८६॥
तदपि रावरी सखिन केर सुन्दर वर रचना।
बाढ़ेउ विपुल सनेह सुनत अतिसय प्रिय बचना ॥८७॥
जन्म जात चातुर्य्य भरीं रस विज्ञ नागरी।
श्री श्रृंगार कलोल केलि कौतुक उजागरी ॥८८॥
हे मानदे सु प्रिये सखिन बिच क्यों न लजाओ।
सकल प्रवीणन माहिं श्रेष्ठ निज नेह जगाओ ॥८९॥
जहाँ प्रवीण समाज सबनि ते जो प्रवीण अति।
वाके गुण कोइ कहै सुनत सो अतिसय सकुचति ॥९०॥
ये सब सखी समाज रावरी करैं बड़ाई।
रूप शील गुण खानि प्रिया सुनि श्रवण लजाई ॥९१॥

तव गुण गण अति अमल सकल भूषण को भूषण ।
बनि अति भूषित करै यथा जग को शशि पूषण ।।९२।।
पुनि हे प्रिया प्रवीण जगत में जन समुदाई ।
जहँलगि विद्या श्रवण सिद्ध या दृगन लखाई ।।९३।।
अपर अनेकन कला भिन्न बहु तिन की लीला ।
प्राप्त भई जो मोहिं सबनि को सुखद रसीला ।।९४।।
सो सब जाननिहार भली विधि प्राण पियारी ।
हो हे धीरोत्तरे सजीवन मूरि हमारी ।।९५।।
मुझ में अस गुण कवन जाहि तुम जानौ नाहीं ।
तुम सों काह दुराव प्रिया सोचहु जिय माहीं । ९६।।
अहो प्रिये सुठि नृत्य मधुर संगीत ताल स्वर ।
सबके मन को खैंचि स्ववश लेवत वरवश कर ।।९७।।
याते हे विधु बदनि सरस दृग मृग अरु मीना ।
खंजन गंजन मदहिं मदन सर सम रस भीना ।।९८।।
रूप शील सौन्दर्य्य भरीं सब राज कुमारी ।
मधुर गीत नृत्यादि कुशल कल कौतुक कारी ।।९९।।
करि कटाव कमनीय हाव अरु भाव दिखाई ।
सब ने "सीताशरण" मोर मन लीन चुराई ।१००।।

दो०–इन सब के मृदु गीत अरु, राग तान मन मोर ।
सुनि-सुनि "सीताशरण अब, अतिसय भयो विभोर ।। ४ ।।

इन सबको लखि कृत्य भयो मम मन लम्पट अति ।
ऐसी वांछा रहति सतत निरखौं उज्वल मति ।। १ ।।

नृत्य निरखि सुनि गीत व्यग्र मन रहत हमारो ।
शिशु पन केर स्वभाव बनो यहि भाँति बिचारो ॥ २ ॥
मम मन सुख रस माहिं सतत नित रहत अशक्ता ।
सपनेहुँ नहिं अनुभवेउ दुःख किमि होय विरक्ता ॥ ३ ॥
हे मिथिलाधिप लली भली विधि कविन सुबानी ।
निज-निज गाथा माहिं रहस लीला रस सानी ॥ ४ ॥
अनुपम अमल अनेक रत्न युत रस को सागर ।
निर्मित कियो विशेष प्रेम पूरित प्रतिभाकर ॥ ५ ॥
विविधि भाव अनुभाव युक्त रचना बिस्तारी ।
लीला अमित अनूप मधुर अद्भुत सुख कारी ॥ ६ ॥
निरदूषण अति स्वच्छ प्रेम बर्धक रत्नाकर ।
प्यारी तव मन मीन संग बिहरौं प्रमोद भर ॥ ७ ॥
हम बनि राघव मत्स सतत क्रीड़हिं तव संगा ।
पावहिं परमानन्द पगे अतिसय रस रंगा ॥ ८ ॥
यह कल क्रीड़ा सिन्धु स्वजन मन आनँद कारी ।
परिकर उर रस दैन ऐन सुख स्वाद अपारी ॥ ९ ॥
यह हम हृदय बिचार सतत येहि बिधि तुम्हरे सँग ।
बिहरत रहौं सनेह सहित नित रँगि तेरेहि रँग ॥१०॥
जैसे जल बिच मीन सदा बिहरत सुख पाई ।
जल बिन जियै न मीन करै कोउ कोटि उपाई ॥११॥
तथा रावरे सहित रास आदिक वर लीला ।
मैं नित अनुभव करौं परम मन हरन रसीला ॥१२॥

रासादिक रसि केलि बिना मम जीवन नाहीं ।
हे प्राणाधिक प्रिये स्वयं जानहु मन माहीं ॥१३॥
हे विदेहनन्दिनी तुमहिं शुचि सिन्धु समाना ।
निर्मल मृदुल स्वभाव प्रेम पागीं जग जाना ॥१४॥
अतिसय खारो जलधि मधुर तम अति सुशील तुम ।
च्तमा दया बहु रत्न भरे तुम में वामें कम ॥१५॥
जिमि सब सरिता बृन्द पाय सागर सुख पावैं ।
परम सफलता लहैं अन्यथा शान्ति न पावैं ॥१६॥
तथा सकल कविराज रावरोहिं गुण गण गावैं ।
तब वाणी हो सफल हृदय में अति सुख पावैं ॥१७॥
जो तुम्हरी गति त्यागि अपर के गुण गण गावै ।
वाणी दूषित होय कदा सुख शान्ति न पावै ॥१८॥
सागर में बहु शत्रु सतत तुम शत्रु रहित अति ।
करतीं सब पर प्रेम बखानत सन्त बिमल मति ॥१६॥
जल की मीनन काहिं जलधि जिमि जीवन आही ।
तिमि तुम सज्जन जनहिं जियावत सुखद सदाही ॥२०॥
यथा प्राप्ति बिन सु जल मत्स को जीवन नाहीं ।
तथा रावरे मिलन बिना सज्जन जन आहीं ॥२१॥
तुम्हरी कृपा कटाच्त बिना सज्जन समुदाई ।
अतिसय रहत अधीर दर्श हित जियत सदाई ॥२२॥
जैसे सागर काहिं मेघ माला भरि देवैं ।
मैं पुरवौं अभिलाप तिहारी पद रज सेवैं ॥२३॥

सागर से जल लेत मेघ पुनि वहीं पठावत ।
मैं तुम से लहि भोग विपुल अर्पत सुख पावत ॥२४॥
मेरे निखिल प्रयास आप ही के सुख लागी ।
निज स्वारथ नहिं चहौं रहौं तव रति रस पागी ॥२५॥
ऐसी आप महान आप की जयति सदा हो ।
हे मम जीवन जरी भूलि जनि बिलग कदा हो ॥२६॥
इमि वर बचन विशेष विमल विधु बदन बिलोकी ।
बोले सुन्दर श्याम राम छवि धाम अशोकी ॥२७॥
सुनि पिय के अनुराग भरे वर बचन मधुर तर ।
पावहिं परमानन्द निखिल परिकर प्रमोद भर ॥२८॥
परम प्रवीण सनेह सनी सब सखी सयानी ।
नव योवन मद भरीं सकल ललना सुख खानी ॥२९॥
मृग अरु खजन मीन सदृश चंचल दृग सोहैं ।
बोलीं हिय हुलसाय प्रिया प्रीतम मुख जोहैं ॥३०॥
हे मम जीवन प्राण युगल प्रीतम अरु प्यारी ।
हम सब सखी समाज दोउन छबि पर बलिहारी ॥३१॥
दोउ को बिबिधि विलाश स्वाद सुख भरित निहारौं ।
प्रमुदित परिकर बृन्द हर्षि हिय तन मन वारौं ॥३२॥
सुख विलास रस रंग रँगे विलसो दोउ प्यारे ।
युगल माधुरी निरखि सुफल दृग होहिं हमारे ॥३३॥
यह महान अभिलाष रहत हिय में सब केरे ।
पिय प्यारी रतिरंग पगे निरखों हँसि हेरें ॥३४॥

अन्वेषण हम सबनि कीन बहु बिधि बहु बारा।
प्रवल परीक्षा पाय प्यार हिय बढ़ेउ अपारा ॥३५॥
दोउ को प्रेम प्रमोद हास कौतुक सुख स्वादा।
निरखत सब को भाग्य उदय दायक अह्लादा।३६॥
सर्वोत्तम सुख सार भाव रस विज्ञ युगल वर।
हम सब के बड़ सुकृत सतत निरखौं सनेह भर ॥३७॥
आश्रित आरति हरन भरन उर सुख रस नाना।
प्रीतम प्रिया प्रवीण प्रीति प्रद परम सुजाना ॥३८॥
तव उपासना सरस सबनि कल्याण प्रदायक।
तुम दोउ परम उदार प्रणत पालक सब लायक ॥३९॥
तव चरणाश्रित स्वजन उपासत निसिदिन तुम को।
यह अनादि सिद्धान्त बिदित नीके बिधि हम को ॥४०॥
सोइ उपासना विशद मिलै हम सबनि सरसतर।
कीजै कृपा कटाक्ष प्राण वल्लभ सनेह घर ॥४१॥
जाकी कृपा प्रसाद चरण पंकज भरि नैना।
साक्षात् मोहिं भये रसिक जीवन रस ऐना ॥४२॥
बिन उपासना किये चरण दर्शन नहिं पावै।
चाहे "सीताशरण" कोटि बिधि यत्न बनावै ॥४३॥
यद्यपि सब अङ्गना अहर्निशि बिपुल बिलासा।
अति विमुग्ध मन रहैं सतत हिय भरीं हुलासा ॥४४॥
बिविधि बिनोद विचित्र बिशद रस रसीं अलीगन।
कौतुक केलि कलोल काम क्रीडा लम्पट मन ॥४५॥

तदपि सु पति व्रत निरतरहैं यह धर्म प्रवर अति ।
पालन करैं प्रमोद भरीं अतिसय निश्चल मति ॥४६॥
स्वतः सर्वदा अगति एक पति ही गति जिनकी ।
पति बिन कुछ भी करैं नहीं समरथ यह इनकी ॥४७॥
अतः अहो प्राणेश सतत हम सब तिय बृन्दा ।
पति के ही अधीन रहैं हिय भरीं अनन्दा ॥४८॥
येही मुख मम धर्म जानिये प्राण जिवन धन ।
निज प्राणाधिक प्रियै देहु आनन्द मुदित भर ॥४९॥
तव श्री चरण सरोज निहित कुम कुम हम पावैं ।
वर्धक मम सौभाग्य यही जिय चाह बढ़ावैं ॥५०॥
सो दीजै करि कृपा प्रिया प्रीतम हर्षाई ।
हम सब को सौभाग्य मूल पद रज सुखदाई ॥५१॥
इमि इन सखियन केर प्रेम पूरित मृदु बानी ।
परम प्रेम रस भरित सुनत हिय अति सुख मानी ॥५२॥
श्री विदेहजा केर सखी सब बचन सरस तर ।
बोली बिपुल विनोद भरीं मन मुदित सुखद वर ॥५३॥
हे पिय परम प्रवीण प्रीति पालक प्रिय नायक ।
जीवन प्राण अधार रसिक वल्लभ सब लायक ॥५४॥
अखिलईश शिर मौर सबहिं अतिरस वश कीना ।
तुम्हरी कीर्ति महान अहो जग में को चीना ॥५५॥
प्राण नाथ हृदयेश करत मो कहँ अभिनन्दन ।
हम अति मसक समान करत तुम को जग वन्दन ॥५६॥

बिमल विभूति अपार अमल अनुपम उदार तर ।
हे शिव हिय के हंस प्रगट रवि वंश सुछबि धर ॥५७॥
तुम्हरी कृपा कटाक्ष पाय हम सब सुख सानी ।
सुधा सरिस हो रहीं सतत पद रज रति मानी ॥५८॥
अपर बिपुल सुर नाग यक्ष किन्नर गन्धर्वा ।
इन सबकी वर बाल केलि कुशला बिधि सर्वा ॥५९॥
जिन ने निज प्रियकण्ठ कोकिला कोटि लजाईं ।
भाव भक्ति भंडार प्रेम पूरित छवि छाईं ॥६०॥
सकल कला निधि पूर्ण प्रीति रस रीति सु जानहिं ।
प्रमुदित सब ही काल बिकलता लेश न पावहिं । ६१॥
जानत सज्जन बृन्द भली बिधि यह सब बाता ।
हे सब भाँति समर्थ रसिक जीवन रस दाता ॥६२॥
पुनि हे विभु परमीश सत्य वक्ता मृदु भाषी ।
हे उदार अति सौम्य प्रीति पोषक रस रासी ॥६३॥
तव वर बचन अमोघ कथित कल केलि सु विद्या ।
पोवौं तुम्हरी कृपा और भ्रम भेद अविद्या ॥६४॥
नासै भली प्रकार परम दुर्लभ उपासना ।
लहौं रावरी कृपा जगै अस प्रबल बासना ॥६५॥
युगल स्वाद सुख हेतु नवल लीला बिस्तारौं ।
प्रेमामृत रस पगे निरखि निज तन मन वारौं ॥६६॥
यद्यपि सब जग अजय आप से जीत न कोई ।
महिमा अकथ अपार प्रगट केहु से नहिं गोई ॥६७॥

तदपि प्रीति की रीति अपूरब कौन बतावै ।
अज अनीह अनवद्य प्रेमबश रास रचावै ॥६८॥
मम मन असविश्वास रावरी कृपा सहारे ।
लैइहौं तुम को जीति बिबश होइहो सुकुमारे ॥६९॥
पुनि अति भाव विनम्र सकल विद्या सम्पन्ना ।
क्षमा दया आनन्द मूर्ति पृथवी उत्पन्ना ॥७०॥
प्रीतम परम प्रवीण चितय बोलीं मृदुमानी ।
सरस प्रेम मय सनी मोद मन्दिर सुखदानी ॥७१॥
हे जीवन धन नाथ स्वजन रक्षक सब लायक ।
पूरक पावन प्रेम राजनन्दन प्रिय नायक ॥७२॥
हृदयेश्वर रसिकेश प्रीति पालक रस सागर ।
नटवर राजकिशोर रास लम्पट नव नागर ॥७३॥
मैं अरु मेरी सखी सतत आश्रित मम रहहीं ।
विपुल वालिका वृन्द सकल तुम्हरोहि सुख चहहीं ॥७४॥
तुम्हरेहि सुखहित नाथ दिवस निशि करहिं प्रयासा ।
हिय भरि परम हुलास करत बहु रास बिलासा ॥७५॥
बिपुल नवल नागरी रावरे सुखहित प्यारे ।
करहिं केलि कमनीय कला कौतुक बिस्तारे ॥७६॥
मेरो यह सर्वस्व सतत प्रिय करैं तिहारो ।
प्रीतम तव सर्वस्व मोर प्रिय काज सँवारो ॥७७॥
यह अति प्रिय भावना जगत में सुखद महाना ।
ईश सरिस फल दानि बिचारहिं परम सुजाना ।७८॥

सकल सिद्धि प्रद सरस अपर नहिं हेतु दुलारे ।
केवल मोद बिनोद प्रेम बर्धक सुकुमारे ।।७९।।
हम दोउन के बीच सख्य रस भाव बढ़ावनि ।
दायक परमानन्द प्रीति परमिति सरसावनि ।।८०।।
हे जग सुन्दर अनघ आप के सकल कार्य वर ।
केवल ममहित भये न तो सुनिये हृदयेश्वर ।।८१।।
अरु मेरे सब कार्य्य सकृत तव हित यदि नाहीं ।
तो निश्चय प्राणेश जानिये निज मन माहीं ।।८२।।
मम अनन्य जेभक्त समर्पण कृत जो सामा ।
तो कहिये प्राणेश आइहै किमि तव कामा ।।८३।।
तैसेहिं भक्त अनन्य रावरे बस्तु सुखद वर ।
जो कछु अर्पण करहिं सुनिय रसिकेश नेह घर ।।८४।।
सो मेरे केहि काज आइहै कहिये प्यारे ।
यदि न भयो एकत्व हमनि बिच प्राण अधारे ।।८५।।
यासे जीवन प्राण सतत सोचिय जिय माहीं ।
हम दोउ परम अभिन्न भिन्न लीला दरशाहीं ।।८६।।
प्रीतम मैं हूँ देह आतमा आप हमारे ।
यदि पिय देह समान प्राण मैं अहौं तिहारे ।।८७।।
देही देह विभाग नहीं हम दोउ बिच छविधर ।
सतत युगल मिलि एस-एक दुइ रूप सुघर वर ।।८८।।
सकल दोष अरु रोष रहित जो कृपा तिहारी ।
सहज सुलभ सो मोहिं बिबिधि सुख स्वाद अपारी ।।८९।।

प्रीतम तव सुख स्वाद सकल मेरे अधीना ।
मेरे सब सुख साज आपहित परम प्रवीना ॥९०॥
हे अति श्रेष्ट उदार आप जो सुख रस पावत ।
लच्मी चाहति सतत स्वप्न में निकट न आवत ॥९१॥
अतः अहो हृदयेश प्राण वल्लभ सुख सागर ।
रसिया नवल किशोर रास लम्पट नव नागर ॥९२॥
नन्दन बनते अधिक आप के उपवन मन हर ।
सुन्दर सुषमा सदन रमन रति रस वर्धन कर ॥९३॥
सो मोकहँ दिखलाय देहु सुख स्वाद महाना ।
अति उत्कण्ठित हृदय मोर हे रसिक सुजाना ॥९४॥
तव अंशन भुज धारि बिपिन मधि बिपुल विनोदा ।
करौं केलि कमनीय मधुर रस भरित प्रमोदा ।९५॥
हे जीवन धन लाल कमल लोचन अभिरामा ।
सब ऋतु सेवित सौम्य परम रस निधि सुख धामा ॥९६॥
प्रिय अशोक वाटिका कृपा करि मोहिं दिखाइय ।
मम सखि जलज सुनयनि सबनि मन आश पुराइय ॥९७॥
निज पद पंकज केर परम ऐकन्तिक सेवा ।
दीजिय दयानिधान जाहि चाहत मुनि देवा ॥९८॥
पर तव कृपा प्रसाद बिना अनुभवे न कोई ।
ज्ञान ध्यान वैराग योग जप तप रत होई ॥९९॥
सो सुख स्वाद विनोद मोद मन्दिर मन भावन ।
दीजिय "सीताशरण" सखिन हिय प्रेम बढ़ावन ॥१००॥

दो०—सुनि इमि बचन मधुर सरस, रसिकेश्वर श्रीराम।
बोले हे मृगनयनि प्रिय, सब बिधि पूरण काम ॥ ४ ॥

यदि तव मन अभिलाष दृगन निरखौं अशोक बन।
तौ मम हिय उत्साह बिपुल सजि साज मुदित मन ॥ १ ॥
मैं तुम्हरे गुण राशि बिबश तन मन धन सारो।
अति आनन्द विभोर प्रिया तव छबि पर बारो ॥ २ ॥
बहु दिन ते अभिलाष यही उर रही हमारे।
सोइ तुम कीन्नी प्रगट देन सुख स्वाद अपारे ॥ ३ ॥
जो मम साज समाज नहीं प्रिय करै तिहारो।
सो मेरे केहि काम तजौं संकल्प हमारो ॥ ४ ॥
जो मेरी प्रिय बस्तु तुमहिं सुख नहिं पहुँचावै।
सो मोकहँ अति दुखद शीघ्र ही किन जरि जावै ॥ ५ ॥
हे अवनीश कुमारि रावरी मृदु अवलोकन।
लखि-लखि मैं हूँ धन्य लहौं आनँद अपमे मन ॥ ६ ॥
भव भाविते उदार अहौं मैं तव अनुगामी।
यही सुजीवन मोर सरस मन हर अभिरामी ॥ ७ ॥
हे प्रिय असितेत्तणे मोहिं हे मृदुसुधाङ्गी।
हे मेरी ईश्वरी अहो सुख प्रद अर्धाङ्गी ॥ ८ ॥
तू ही सर्वस मोरि दास मैं अहौं तिहारो।
सत्य-सत्य मम बचन प्रिये निज हृदय बिचारो ॥ ९ ॥
यहि बिधि सरस सनेह सने निज रमण बचन वर।
श्री विदेहनन्दिनी हर्षि हिय जयति-जयति कर ॥१०॥

नित नव नव उत्साह भरी नव उत्सव करनी ।
होली झूलन ब्याह शैन लीला रस भरनी ॥११॥
पिय को आनँद दानि मैथिली जनक किशोरी ।
बोलीं बचन बिनोद मोद पूरित रस बोरी ॥१२॥
मन्द मधुर मुस्कान कोटि शशि प्रभा लजावन ।
अमृत मय प्रिय बैन जयति जय–जय मन भावन ॥१३॥
अखिल विश्व जय करन अजय अज अनघ अनामय ।
विशद कीर्ति धर लाल काम पूरन करुणामय ॥१४॥
तिनको करि निज बिबश मोद मन्दिर छवि रासी ।
श्री मैथिली सनेह सनी अति प्रेम पियासी ॥१५॥
पिय को कण्ठ लगाय लाय हिय रति रस फूली ।
प्रीतम बदन मयंक निरखि तन मन सुधि भूली ॥१६॥
चितवति चंचल चखन चोरि चित चखति अधर रस।
प्रेमावेश सु हर्ष अश्रु सींचत उज्वल यस ॥१७॥
गाढ़ालिंगन किये अलग होवन नहिं देवैं ।
पगीं पिया के प्यार लाड़िलीं अति सुख लेवैं ॥१८॥
तब पिय पूरण काम राम सुखधाम सुभग तर ।
कोटि मदन मद हरन सकल सौन्दर्य मूर्ति वर ॥१९॥
बहु सुरपति से सरस सुखद ऐश्वर्य महाना ।
निज रामागण विपुल स्वाद रस सने सुजाना ॥२०॥
अतिसय श्रेष्ट उदार शील सुषमा सुख सागर ।
क्षण प्रति नव नव छटा परम लावण्य उजागर ॥२१॥

नख सिख ललित शृँगार बयस अति नवल किशोरा ।
लोचन रति रस पगे सखिन मन बुधि चित चोरा ॥२२॥
श्री रघुराज कुमार सकल समरथ सब लायक ।
काम केलि कल कुशल प्रेम लम्पट नव नायक ॥२३॥
श्री मैथिली समेत सखिन सँग रमण करन हित ।
श्री अशोक वाटिका मध्य प्रविशे प्रमुदित चित ॥२४॥
जेहि के चहुँदिशि बिपुल बिपिन बर बिटप रसाला ।
कंचन मणिमय भूमि रतन बिरचित छबि जाला ॥२५॥
ब्रह्मादिक सुरराज मदन मद मथन बिपिन वर ।
जहँ बिलसत रसिकेश भानु कुल कमल विभाकर ॥२६॥
सब ऋतु अतिमन मुदित परस्पर करैं बिचारा ।
अखिल अवनि अवनीश अवध पति सुत सुकुमारा ॥२७॥
चक्रवर्ति महराज तनय रघुवर नव नायक ।
नवल नायिकन नेह पगे परिकर सुख दायक ॥२८॥
अमित नागरिन संग करन हित बिपुल बिहारा ।
भरे हृदय उत्साह पधारे विपिन मझारा ॥२९॥
हम सबको यह उचित बिबिधि विधि स्वागत करहीं ।
अति प्रिय सेवा पाय रसिक वर हिय सुख भरहीं ॥३०॥
षटऋतु अस मन सोचि स्वगुण गण युक्त जोरि कर ।
नम्र भाव सम्पन्न गईं जहँ रसिक छैल कर ॥३१॥
पुनि भू सागर सप्त सहित आनन्द समाई ।
चक्रवर्ति नृप सुवन निकट तन धरि चलि आई ॥३२॥

निज प्रिय पुत्री काहिं अतर वर रत्न अपारा।
भूषण मणि गण दिव्य सुहावन बिबिधि प्रकारा ॥३३॥
प्रमुदित अर्पण कीन जलधि युत महि सुख पाई।
विबिधि लतावर कुंज-केलि हित तव प्रगटाई ॥३४॥
भइ समान सब भूमि परम शोभा बनि आई।
चमचमात मणि सरिस प्रभा पूरित सुखदाई ॥३५॥
बहुरि सकल गिरि सहित सरित मन्दाकिनि आदी।
धरि वर दिव्य सुरूप हृदय में अति अह्लादी ॥३६॥
भूषण बसन सुहात नवल नर नारि स्वरूपा।
प्रगटे सिय पिय सुखद सकल मिलि अमल अनूपा ॥३७॥
पुनि सुमेरु गिरि सहित सकल गिरिराज पधारे।
चित्रकूट प्रभु कृपापात्र मन मोद अपारे ॥३८॥
अति उत्कण्ठित सकल गये रघुवर के आगे।
धरि वर मनुज स्वरूप परम प्रेमामृत पागे ॥३९॥
सब ईशन के ईश जानकी रमण रसिक वर।
रास विहार विनोद करन इच्छा लखि सुर नर ॥४०॥
सिद्ध मुनीश अनेक कमल युत जल थल सारो।
अनल अकाश समीर तत्त्व श्रुति पंच पुकारो ॥४१॥
रघुनन्दन रुचि जानि करनहित रास मधुर तर।
सब आनन्द विभोर चराचर जीव मोद भर ॥४२॥
बाढ़ेउ परमानन्द जगी शिव केर समाधी।
सब जग के बुध अबुध हृदय की मिटी उपाधी ॥४३॥

भव भाविते विशेष भईं प्रमुदित अपने मन ।
अस्त्र शस्त्र धरि रूप सकल प्रविशे सुन्दर बन ।।४४।।
लीला ललित विचित्र सरस अनुभव के कारन ।
अस्त्र शस्त्र मिलि मनुज रूप कीने सब धारन ।।४५।।
श्रीरसिकेश सु चरण कंज मधि नमस्कार करि ।
सिय पिय रच्छा हेत विपिन प्रविशे हिय मुद भरि ।।४६।।
पिय पद पावन प्रीति प्रबल प्रतिभा प्रतिकाशित ।
सहज अकृत्रिम तेज सर्वदा स्वयं प्रकाशित ।।४७।।
जहँ तहँ स्थित भये हृदय में अति सुख पाई ।
प्रिय परिकर रुचि रखन हेत आनन्द समाई ।।४८।।
रघुनन्दन रुचि जानि स्वर्ग की सर्व प्रधाना ।
काम धेनु तहँ गई जहाँ रसिकेश सुजाना ।।४९।।
हिय भरि भाव पुनीत बचन बोली प्रिय रस भर ।
जग सुख वर्धक लाल राजनन्दन उदार तर ।।५०।।
हूँ मैं तव किंकरी मोहिं जो आयसु दीजै ।
सो मैं करौं सप्रेम मोर सेवा कछु लीजै ।।५१।।
अष्ट सिद्ध नव निद्धि रागरागिनी सुखद वर ।
धरि-धरि मधुर सुमूर्ति गईं जहँ रूप सुछविधर ।।५२।।
जिनको सब जग चहै कदा कहुँ पावत कोऊ ।
अनुपम रूप बनाय गईं रघुवर ढिग सोऊ ।।५३।।
जाको परम महत्व विश्व जेहि को अनुरागी ।
सोउ बसंत रागिनिन सहित आयो रस पागी ।।५४।।

येहि विधि साज सजाय श्याम सुन्दर रघुनन्दन ।
बहु बिधु बदनी वाम संग क्रीड़ा रस रंजन ॥५५॥
बिपुल बिहार विनोद बिशद रस रमण मधुर तर ।
करत केलि कमनीय कला कुशला सनेह भर ॥५६॥
अलि आलिंगित ललन अधर रस चखत सुखारे ।
दृग सों दृगन मिलाय प्रेम लम्पट सुकुमारे ॥५७॥
सकल देव सुर राज रमण लखि निपट लजावत ।
अंग कान्ति कमनीय दीप्ति दीपित मन भावत ॥५८॥
वयस सु नवल किशोर परम रस बोर प्रिया सँग ।
करत विनोद बिहार बिशद अलिबृन्द नेह रँग ॥५९॥
जिमि नवीन वय करिनि संग दुर्मद गजेन्द्र बन ।
क्रीड़ा करै स्वतन्त्र प्रेम पूरित प्रसन्न मन ॥६०॥
तथा बिपुल वर बाम लिये प्रमुदित रघुनन्दन ।
प्राण प्रिया रस पगे करत क्रीड़ा जग वन्दन ॥६१॥
अलि गण वाद्य सु राग तान संगीत श्रवण करि ।
अति अह्लादित भये राजनन्दन उमंग भरि ॥६२॥
प्रिया अंश भुज धारि मन्द मुसुकाय रसिक वर ।
करि कटाक्ष कमनीय केलि रस पगे सु छवि धर ॥६३॥
निज सु अँगुलि संकेत प्रियै बन की सुघराई ।
सादर रहे दिखाय प्रीति पूरित सुखपाई ॥६४॥
सर्व सुगुण सम्पन्न चतुर दक्षिण वर नायक ।
चक्रवर्ति नृप सुवन भुवन भूषन सब लायक ॥६५॥

बिपुल बिमल शशि प्रभा लजावन सिय मुख शोभा।
निरखत प्रेम विभोर प्राण प्रीतम मन लोभा ॥६६॥
बोले बचन रसेश रास रस रसिया रघुवर।
हे विदेहनन्दिनी प्राण वल्लभे हृदय हर ॥६७॥
तुम्हरो रूप अनूप आज मम मनहिं लुभावै।
नयन सु शयन कटाक्ष निरखि तन भान भुलावै ॥६८॥
अंजन अंजित नयन सरस कजरारे प्यारे।
सुन्दर भ्रू मन हरन कोटि रति को मद मारे ॥६९॥
सुर नर मुनि समुदाय सतत तुम्हरो गुण गावत।
स्तुति करि मन मुदित हृदय में अति सुख पावत ॥७०॥
तव मनहर सौन्दर्य केर अनुभव हम करहीं।
लखि बिधु बदन सु हास मोद अपने उर भरहीं ॥७१॥
सर्व दोष से शून्य विमल विधु बदन तिहारो।
मम जीवन सर्वस्व सकल सुख बर्धनिहारो ॥७२॥
इस बन की लक्ष्मी तुम्हीं हे प्राण पियारी।
नयनोत्सव सुख दानि सखिन मन आनँद कारी ॥७३॥
मणि मोतिन की माल जाल फूलन के गजरा।
परम सुहावन लगत निरखि मोहत मन हमरा ॥७४॥
कहुँ मणि मोतिन रचित लता पल्लव छवि छावत।
देखिय बनमधि बिपुल मोर नृत्यत अति भावत ॥७५॥
अमित मराल सु पंक्ति मनहुँ तव अस्तुति करहीं।
कोकिल गण कल कंठ मृदुल बानी उच्चरहीं ॥७६॥

भ्रमर पंक्ति गुंजरत मनहुँ मंजीर सु ध्वनि वर ।
पूरि रही बन मध्य सबनि हिय सुख प्रमोद कर ॥७७॥
बिमल जलाशय माहिं विपुल वर जलज बिकाशित ।
सुठि सौरभ सम्पन्न मधुर मकरन्द प्रकाशित ॥७८॥
तिन पर गुंजत भ्रमर भुंड अतिसय मद माते ।
पीवत ललित मरन्द प्रेम पगि हिय इठलाते ॥७९॥
यह तव सेवक सकल दिवस निशि तव गुण गावत ।
प्यारी तव आगवन जानि मन मोद मनावत ॥८०॥
हे सुन्दरि देखिये मृगन के भुंड अपारे ।
सख्य भाव दिखलाय दरश ये करत तिहारे ॥८१॥
बन अशोक के सुफल मधुर मधु द्रवित अमृत मय ।
सम्पति सकल सजाय लसत वाटिका प्रेम मय ॥८२॥
तुम्हरी सेवा हेत सकल यह साज सजायो ।
याको "सीताशरण" दृगन लखि तुम अपनायो ॥८३॥
ये सिरीष के कुसुम बहुत लम्बे सुखदाई ।
फूले चम्पक चारु विपुल शोभा प्रगटाई ॥८४॥
पनस नितम्ब सदृश्य बिम्ब फल अधर समाना ।
दाड़िम फल जनु दन्त पंक्ति विकशे बिधि नाना ॥८५॥
सघन चमेली खिली मन्द मुसुकान जनावै ।
भ्रमर पुंज अति गुंज सो अलकावली सुहावै ॥८६॥
खंजरीट अति चपल मनहुँ अवलोक न याकी ।
स्वेत कमल जनु नयन वनी सुषमा अति बाँकी ॥८७॥

लाल कमल कर कंज सुहावन ललित तमाला ।
याको चोटी सदृश लखो प्यारी छबि जाला ॥८८॥
नव नव सुमन सुगुच्छ मनोहर कर्ण विभूषन ।
विल्व सुफल अति सुभग लसत याके कुच शुचि तन ॥८९॥
ललित लता लावण्य भरित कटि कदलि जंघ वर ।
अरुण गुलाव सु चरण केर सुषमा प्रकाश कर ॥९०॥
पल्लव पुंज अनूप अरुण अतिसय छवि पावत ।
ललित पराग सुटाल नवल अँग राग जनावत ॥९१॥
शीतल मन्द सुगन्ध मनोहर पवन त्रिविधि वर ।
याके अंग सु वस्त्र गन्ध सूचक प्रमोद कर ॥९२॥
पूरक सबही काम काम सुरभी अति पावन ।
विमल वाटिका केर माधुरी मधुर सुहावन ॥९३॥
सुमन सुमाल सुजाल लता लपटी अति प्यारी ।
याके अति आनन्द सिन्धु के वर्धनिहारी ॥९४॥
अहो देवि तव सहित मोहिं अतिसय सुख कारी ।
यह वाटिका अनूप रूप धारे मन हारी ॥९५॥
याको नाम अशोक शोक सब दूर भगावै ।
जिमि ग्रीष्म सन्तप्त पुरुष अति ही घबरावै ॥९६॥
पुनि शीतल जल पाय यथा आनन्द समावै ।
तिमि अशोक वाटिका शोक समुदाय नसावै ॥९७॥
दन्त पंक्ति कमनीय प्रिये मम प्राण पियारी ।
मदनोष्ण सन्तप्त मोहिं अति शीतल कारी ॥९८॥

यह अशोक वाटिका सकल विधि मोद प्रदायक ।
यद्यपि मैं नृप तनय सतत सब विधि सब लायक ॥६६॥
दो०–यह अशोक वर वाटिका, मंजु मधुर मकरन्द ।
बर्षत "सीताशरण" नित, अतिसय आनँद कन्द ॥ ६ ॥

कुमुद केतकी कलित कला निधि कुण्डल सुहत ।
जँबीर सुफल अनूप ललित कन्दुक मन मोहत ॥ १ ॥
विबिधि पच्छिगण सहित सुसाखा मनहुँ हस्त वर ।
विपिन विचित्र सुपंक्ति बिपुल वीथिका हृदय हर ॥ २ ॥
नवल निकुंज अनूप सघन मम मन चंचल करि ।
मदन मरोर बिशेष प्रगट उत्साह हृदय भरि ॥ ३ ॥
इमि अशोक वाटिका व्याज प्यारी सुअंग की ।
उत्प्रेच्छा पिय कीन महारति रस सु रंग की ॥ ४ ॥
येहि विधि पिय वर बचन रचन रस प्यास समानी ।
सुनि मैथिली प्रवीण पियै आपन बस जानी ॥ ५ ॥
ललकि लगीं पिय कंठ युगल भुज गर लपटाई ।
प्रेमावेश विशेष निरखि विधु बदन सिहाई ॥ ६ ॥
मन्द मधुर मुसुकाय सुकेशी सुख निधि श्यामा ।
श्री विदेहनन्दिनी राम रमणी छबि धामा ॥ ७ ॥
पिय मुख सुषमा देखि एक टक रहीं निहारे ।
परमानन्द प्रबाह परीं पुनि-पुनि बलिहारी ॥ ८ ॥
मानहुँ सुभग तमाल माहिं सुठि कनक बेलि वर ।
लपटी हिय ललचाय परम हर्षाय मोद भर ॥ ६ ॥

जिन पिय की छबि निरखि परम सुन्दर सुर नारी ।
चाहत रति रस रमण मानि मन मोद अपारी ॥१०॥
पिय मुख चन्द्र पियूष माधुरी निरखि बिकानी ।
अति मदनातुर भईं अपनपौ निपट भुलानी ॥११॥
पुनि रति रमण नरेश माहिं शिरताज राज सुत ।
राम परम सुख धाम काम नाशक प्रमोद युत ॥१२॥
ऐसे प्रीतम सहित पतिव्रता परम प्रवीना ।
परमैश्वर्य स्वरूप नेह निधि वयस नवीना ॥१३॥
श्री विदेहनन्दिनी पिया की परम पियारी ।
हँसि अंशन भुज धारि रूप रस पियत सुखारी ॥१४॥
पाट असतरन सदृश सरस दुर्वा युत महि पर ।
करन सुक्रीड़ा चहत युगल रसिकेश नेह घर ॥१५॥
उत्तम विपुल पदार्थ मधुर मेवा पकवाना ।
पिय को स्वकर पवाय मैथिली कर मृदु गाना ॥१६॥
तिमि प्रीतम चितचोर चितय चख चखन मिलाये ।
प्यारिहिं स्वकर पवाय गाय बहु भाँति रिझाये ॥१७॥
परम प्रीति परतीत पगे परिकर पिय प्यारी ।
पावहिं परमानन्द प्रेम पूरित सुख कारी ॥१८॥
सरस सुगन्धन भरे सुधा सम असन अनेका ।
परम स्वाद सम्पन्न सुखद एकन ते एका ॥१९॥
रुचि वर्धक प्रिय मधुर तुष्टि अरु पुष्टि प्रदायक ।
खात खवावत युगल प्रेम लम्पट रस नायक ॥२०॥

विधु बदनी वर वाम पिया कर भोजन करहीं।
तुष्टि पुष्टि सुख स्वाद सकल प्रीतम हिय भरहीं ॥२१॥
पराकाष्ठा प्रेममयी यह दम्पति केरी।
निरखहिं नव नायिका रहैं पद पंकज नेरी ॥२२॥
तत्पश्चात् प्रवीण प्रीति पागीं सब अलि गन।
विविधि सुक्रीड़ा कुशल देव नारिन सम शुचि मन ॥२३॥
रूप शील सौन्दर्य सिन्धु सब उमा रमा सम।
रति रस विज्ञ महान सकल गुण खानि अनूपम ॥२४॥
नख सिख नवल श्रृंगार सजे अगणित अलि बृन्दा।
पावत शेष प्रसाद भरीं हिय अति आनन्दा ॥२५॥
बहुरि लता वर कुंज सुमन रचना जहँ सोहत।
खिले विविधि वर फूल सकल परिकर मग जोहत ॥२६॥
तहँ सब सखियन संग सिया सिय पिय पग धारे।
पगे परम अनुराग परस्पर गल भुज धारे ॥२७॥
चहुँदिशि सखी समाज सौंज सेवा कर साजे।
चँवर छत्र वर ब्यजन लिये प्रमुदित मन राजे ॥२८॥
चितवहिं चंचल चखन चतुर चितचोर नवेली।
रिझवहिं युगल किशोर करहिं क्रीड़ा अलवेली ॥२९॥
विविधि भेद वर गान तान संगीत नृत्य करि।
पावहिं परमानन्द प्रेम पूरित उमंग भरि ॥३०॥
निज इच्छा अनुकूल सकल वर भाव दिखावें।
कौतुक केलि कलोल कोटि विधि करि सुख पावहिं ॥३१॥

पिय को रूप स्वभाव शील गुण छन्द बद्ध करि ।
गावहिं गीत रसाल लाल सुनि हिय उमंग भरि ॥३२॥
प्रगटे सात्विक भाव स्वेद रोमांच कम्प तन ।
झरन लगे दृग अश्रु रमण रति रस लम्पट मन ॥३३॥
सकृत स्वकीया रमण राम रसिकेश सुघर वर ।
पूरक पावन प्रेम प्रीति पालक उदार तर ॥३४॥
परकीया रति रमण सर्वथा तजि रघुनन्दन ।
रमत स्वकीयन संग प्रेम रँग रँगि जग वन्दन ॥३५॥
यदपि सरस सौन्दर्य शील गुण सिन्धु रसिक वर ।
तदपि स्वकीयन रंग पगे रस रूप सु छवि धर ॥३६॥
रतिरस लम्पट लाल प्रेम पूरित रस सागर ।
प्रेमिन प्राणाधार प्रणत पालक नव नागर ॥३७॥
करत केलि कमनीय बिबिधि बिधि सखियन संगा ।
रमि रमाय सुख देत लेत रँगि रति रस रंगा ॥३८॥
प्रमुदित परिकर निकर दिवस मधि बिबिधि प्रकारा ।
पिय प्यारी को सजत सु नख सिख नवल शृँगारा ॥३९॥
प्रीतम प्यारी मुदित परस्पर करत शृँगारा ।
राई लोन उतारि तोरि त्रण भरि उद्गारा ॥४०॥
वारि पियत दोउ बारि बार बहु कण्ठ लगाये ।
पुनि-पुनि हो वलिहार प्रेम रस सिन्धु समाये ॥४१॥
निरखत एकटक रूप सुधा सागर उमगावत ।
अनमिष रहे निहार बने गलहार सुहावत ॥४२॥

पिय सब सखियन केर रचत नित नवल शृँगारा।
स्वकर सुमन सुठि माल जाल रचि बिविधि प्रकारा ॥४३॥
सब सखियन पहिराय प्रेम युत सब के संगा।
करत बिहार विनोद बिपुल बिधि रति रस रंगा ॥४४॥
निज अँग सबहिं रमाय रमत सब के सँग रघुवर।
बिहरत बीथिन मध्य दियेगल बाहँ मुदित उर ॥४५॥
निज-निज रुचि अनुकूल सबहिं सुख स्वाद महाना।
देवत "सीताशरण" रसिक बल्लभ मन माना ॥४६॥
निशि मधि सखियन सहित सिया सँग रास रसाला।
करत रसिक शिरताज राजनन्दन रघुलाला ॥४७॥
नृत्यत भरि अनुराग सखिन कर पकरि नचावत।
बिविधि ताल युत राग तान लै मृदु स्वर गावत ॥४८॥
कलित कामिनी केलि कला कल कुशल सु क्रीड़ा।
कोटिन कौतुक करहिं कदा नहिं मानत व्रीड़ा ॥४९॥
नवल नायिका नेह नमित जस लीला करहीं।
तदनुकूल अनुभाव विभावादिक अनुसरहीं ॥५०॥
गुप्त निकुंजन माहिं सखिन सँग सरस रमण रति।
परमैकान्तिक केलि करत रसिकेश विमल मति ॥५१॥
पर सर्वथा अदोष परम अभिराम काम हर।
केवल प्रेम प्रकर्ष हर्ष उत्साह हृदय धर ॥५२॥
करत विनोद बिहार बिपुल बिधि रूप रसिक वर।
देत लेत सुख स्वाद सबनि रुचि रखत मोद भर ॥५३॥

रासस्थली मझार सबनि सँग नृत्यत गावत।
पगे प्रिया के प्यार परम कौतुक प्रगटावत ॥५४॥
कामधेनु सम सुरभि सुखद पय पियत पियावत।
प्रिया प्रेम रस पगे सखिन हँसि कण्ठ लगावत ॥५५॥
गाढ़ालिंगन करत अंक वैठाय प्यार करि।
चुम्बत अमल कपोल अधर रस चखत मोद भरि ॥५६॥
हंसि दृग दृगन मिलाय सबनि गल हार बनाई।
रमत रसिक शिरमौर राजनन्दन रघुराई ॥५७॥
सखि सब भरी सनेह नींद श्रम भूख पिपासा।
आधि ब्याधि सन्ताप अरुचि तजि परम हुलासा ॥५८॥
भय चिन्ता अरु रोग शोक उद्वेग न मानहिं।
श्रम उचाट तजि आलसादि पिय को सुख सानहिं ॥५९॥
यह सब प्राकृत दोष सखिन में भूलि न आवहिं।
सत चित आनँद रूप सकल परिकर सुख पावहिं ॥६०॥
दिव्य सच्चिदानन्द कन्द रघुनन्द द्वन्द हर।
पराशक्ति मैथिली परम अह्लाद मोद कर ॥६१॥
तैसेइ परिकर निकर सकल आनंद स्वरूपा।
दोष रहित गुण राशि परम रस रूप अनूपा ॥६२॥
हेम शिशिर अरु शरद त्रिऋतु रघुवर मन भावहिं।
वर्षा ग्रीष्म बसन्त मैथिलिहिं मोद बढ़ावहिं ॥६३॥
हेमादिक ऋतु माहिं पिया की रुचि अनुसारा।
कौतुक रास विलाश होत रस रूप अपारा ॥६४॥

बर्षादिक ऋतुराज माहिं सिय रुचि अनुसारी।
करत महाँ रस रास रसिक मणि रास बिहारी ॥६५॥
येहि विधि षटऋतु माहिं बिपुल बिधि रास बिलाशा।
करहिं सखी समुदाय पाय सिय कृपा प्रकाशा ॥६६॥
कहत सूत अब सुनहु शौनकादिक मुनि बृन्दा।
प्रिया रास सुख रूप प्रदायक परमानन्दा ॥६७॥
मुख्य सखिन के सहित पिया संग कीन किशोरी।
अद्भुत अमल अनूप अकथ अतिसय रस बोरी ॥६८॥
प्रमुख सखी कछु सुभग गगन मधि बिचरन वारी।
श्री रसराज प्रसंग विज्ञ छबि रूप उजारी ॥६९॥
विशद भाव अनुभाव विभावादिक गुण खानी।
नृत्य गान संगीत निपुण उज्वल रस सानी ॥७०॥
अतिसय सरल स्वभाव शील सौन्दर्य पवित्रा।
निज लीला सु प्रसिद्धि सुखद अति विमल चरित्रा ॥७१॥
बोलत सूत सुजान सुनहु शौनक मुनि ज्ञानी।
सत्यवती के पुत्र ब्यास रस निधि गुण खानी ॥७२॥
वरणेउ सिय रघुबीर रास रस बिबिधि प्रकारा।
सज्जन सुखद सु स्वाद दान अतिसय बिस्तारा ॥७३॥
श्री शृँगार रस भाव सहित ध्यावहिं जे रासा।
ते सज्जन सुख स्वाद पगे पाइहैं हुलासा ॥७४॥
उनको यह रस रास परम सुख सम्पति रूपा।
पिय प्यारी माधुरी भरित अति सरस अनूपा ॥७५॥

नाना केलि कलोल अनेकन भेद समेता ।
गुणागार सुखसार लखहिं जे परम सचेता ॥७६॥
पिय प्यारी गुण राशि सुधा सरिता सम जानो ।
लीला तद् अनुसार बिपुल लहरैं अनुमानो ॥७७॥
यह पावन रस रास केर कण मात्र जो पावै ।
काम क्रोध लोभादि रूप ज्वर निपट नशावै ॥७८॥
अस वर्णेउ श्री व्यास कीन मुझ पर भी दाया ।
उनकी कृपा कटाक्ष एक कण मम उर आया ॥७९॥
जे सज्जन सिय राम रास रस सागर ध्यावहिं ।
तिन को "सीताशरण" शम्भुअज शीश नवावहिं ॥८०॥
वाकी कीरति कलित कहै अस को कवि ज्ञानी ।
जाकी "सीताशरण" सुमति रस सिन्धु समानी ॥८१॥
सर्व सुलक्षण खानि अवनिजा सुषमा गारा ।
प्रीतम प्रीति प्रतीति पगी अति चरित उदारा ॥८२॥
ऋतु के गुण सत्कीर्ति रूप सम्पति समुदाई ।
पिय के भूषण रूप मनहुँ राजत तरुनाई ॥८३॥
चहुँदिशि दीप्ति बसन्त सजी निज सम्पति सारी ।
सकल शोक करि नाश मंजु मुद मंगल कारी ॥८४॥
रघुवर प्राणाधार प्रिया श्री राजकिशोरी ।
सखियन सहित निशि मध्य कीन जो रास अथोरी ॥८५॥
सो सुनिये मन लाय चित्त करि सावधान अति ।
सब बिधि सुन्दर सुखद प्राण वल्लभ निर्मल मति ॥८६॥

सोचत निज मन माहिं कौन तप मैनें कीना।
जाको सुन्दर सुफल विधाता मोकहँ दीना ॥८७॥
प्राकृत अरु जे दिव्य लोक जेते जग माहीं।
मम प्राणाधिक प्रिया सरिस दूसरि तिय नाहीं ॥८८॥
जग में जेते रूप वान दीखत नर नारी।
सब में इनकेहि रूप केर जगमगत उजारी ॥८९॥
नर नारी जग केर रूप इन हीं से पाई।
रूपवान बनि गये छटा इन नेहिं छिटकाई ॥९०॥
रूप अनूप अपार सरस शोभा की मूरति।
शुचि सुशीलता सौम्य सरलता की सुठि सूरति ॥९१॥
मैं भेंटी भरि अंक प्यार सों कण्ठ लगाई।
आगे पीछे वाम दहिन देखत न अघाई ॥९२॥
मेरे नयन अतृप्त अबहिं भी तृप्ति न मानत।
ज्यों ज्यों निरखत अधिक प्रेममें त्यों चित सानत ॥९३॥
जो शृँगार रस सार परम भोक्ता प्रिय नायक।
तिन सब के शिर मौर परम शिक्षक सब लालक ॥९४॥
रामागण मन रमण यथा अधिकार प्रदाता।
जन के दोष समूह नाशि परमानँद दाता ॥९५॥
रघुवर राजकिशोर रसिक शिर मौर मुदित मन।
राजस्थली मझार बिबिधि मणि जटित सिंहासन ॥९६॥
बिच निज सुनिधि अनूप निरखि मैथिली मोद कर।
सुन्दर अंग उमंग रंग रस भरीं सुखद वर ॥९७॥

गाढ़ालिंगन कीन परम सुख सिन्धु समाई ।
निरखत बदन मयंक सु छबि लखि गये बिकाई ॥९८॥
अपर अमित नागरी सबनि को यथा योग्य वर ।
दीने भूषण बसन अंगरागादि सरस तर ॥९९॥
प्रथमहिं पिय रुचि जानि विश्वकर्मा अनूप थल ।
विरचेउ "सीताशरण" रास मण्डप अद्भुत कल ॥१००॥
दो०-बिबिधि भाँति बहु दिव्य मणि, माणिक रत्न अपार ।
"सीताशरण" प्रकाश निधि, रचना रची सुधार ॥ ६ ॥
जिस रासस्थल मध्य राजनन्दन सखि संगा ।
पगि प्यारी के प्यार करहिं गे रास प्रसंगा ॥ १ ॥
कोटिन कामिनि कलित काम क्रीड़ा सु विज्ञ अति ।
सजि निज नवल शृंगार प्रेम पूरित निर्मल मति ॥ २ ॥
कौतुक केलि कलोल कला कल कुशल नागरी ।
नृत्य गान संगीत विपुल विद्या उजागरी ॥ ३ ॥
नवल नायिका नेह भरीं सुख स्वाद कराई ।
दम्पति रुचि अनुकूल रास उत्सव दिखलाई ॥ ४ ॥
निज-निज विद्या कला कुशलता दुहुँन दिखैहैं ।
लखि-लखि प्रीतम प्रिया हृदय में आनँद पैइहैं ॥ ५ ॥
मुदित परीक्षा सबनि केर करिहैं पिय प्यारी ।
बाजा बिबिधि बजाय गान करिहैं सखि सारी ॥ ६ ॥
पगि अनुराग अपार प्रिया प्रीतम सुखपाई ।
नृत्य गान संगीत स्वयं करिहैं हर्षाई ॥ ७ ॥

इमि सखि वृन्द समेत प्रिया प्रीतम रस पागे ।
करिहैं केलि कलोल रास उत्सव अनुरागे ॥ ८ ॥

❀ बिबाहोत्तर गोपकन्यारास प्रकरणम् ❀

गोप सुता समुदाय प्रथम मण्डल पिय केरो ।
पूर्व परिग्रह यही दीन सुख पियहिं घनेरो ॥ ९ ॥
मणि आसन आसीन अवनिजा प्राण पियारे ।
पिय प्यारी सुख पगे लसत अंशन भुज धारे ॥१०॥
पूर्वदिशा निशिनाथ उदित हो गगन मध्य गत ।
गोपसुता संकेत पाय पिय को अति प्रमुदित ॥११॥
उठीं सनेह समेत रास रस वर्धन कारन ।
अपर विपुल नागरी चलीं पिय कीन निवारन ॥१२॥
यदपि भरीं उत्साह तदपि पिय नयन इसारे ।
बैठीं सब हर्षाय युगल छबि लखत सुखारे ॥१३॥
गोपसुता समुदाय मध्यमणि चौक विराजत ।
नृत्यत भरि अनुराग बिपुल वर वाद्य बजावत ॥१४॥
गावहिं गान रसाल ताल वर तान रसीलीं ।
हाव भाव कमनीय कटाच्छन युत रिझवीलीं ॥१५॥
लखि जिनको वर नृत्य श्रवण करि राग तान वर ।
परम जितेन्द्रिय ब्रह्म निष्ठ मुनि मन प्रमोद भर ॥१६॥
रासानन्द समुद्र मगन डूबत उतरावत ।
करत विविधि वर यत्न चित्त थिरता नहिं पावत ॥१७॥

ऐसो नृत्य अनूप श्रवण से सुना न देखा ।
गोप सुतन जो कीन भयो आश्चर्य विशेषा ॥१८॥
लखि तिन को वर नृत्य गान संगीत श्रवण कर ।
श्री मिथिलाधिप लली भईं प्रमुदित अपने उर ॥१९॥
परम प्रसंसा कीन सबनि अति आदर दीना ।
करि सत्कार महान पिया को निज बश कीना ॥२०॥
बोले रसिक नरेश प्राण वल्लभ रस सागर ।
प्रीतम परम उदार रूप रसिया नव नागर ॥२१॥
हे भद्रे हे पिये अहो कल्याणि स्वरूपा ।
तव अस्तुति कल्याण रूप हे अमल अनूपा ॥२२॥
हे मम जीवन मूरि मनीषिणि राजकिशोरी ।
"सीताशरण" सनेह सनी हे रति रस बोरी ॥२३॥
हे कमनीय उदार परम रमणीय गुणाकर ।
हे सौम्ये रस रूप रसिक रस दानि मोद घर ॥२४॥
यह सब तुम्हरेहिं योग्य जनन के लघुगुण केरी ।
भूरि-भूरि हर्षाय प्रसंसा करत घनेरी ॥२५॥
तदनुकूल पहिचानि देत आदर सनमाना ।
यह तव शील स्वभाव भली बिधि मैं जिय जाना ॥२६॥
येहि बिधि परम सनेह सहित रघुनाथ कुँवर वर ।
प्राण प्रिया की कीन्ह सरस स्तुति प्रमोद भर ॥२७॥
सिय स्वामिनि कृत परम प्रसंसा सुनी श्रवण जब ।
बोलीं गोपकुमारि सकल हिय अति सनेह तब ॥२८॥

हे पूज्ये हम अहैं परम ग्रामीण नागरी।
तुम मिथिलेश कुमारि कलानिधि गुण उजागरी ॥२९॥
बन बसि पालक धेनु दूध दधि बेचन हारे।
अस कुल में मम जन्म कहाँ गुण शील हमारे ॥३०॥
कहँ मोहिं शिक्षा मिली प्रसंसा जो तुम करहू।
यह तव शील स्वभाव आपने गुण अनुसरहू ॥३१॥
विपुल बड़ाई कीन मोहिं बहुबिधि सत्कारेउ।
कृपामयी करिकृपा हमनि अब स्वकर सँवारेउ ॥३२॥
कहिये कहँ हम और कहाँ यह सखी तिहारी।
जन्मी तुम्हरे साथ राजकुल कीर्ति उजारी ॥३३॥
पाई तव सख्यता भाव भूषित सब बाला।
नख सिख रूप अनूप सरस सौन्दर्य रसाला ॥३४॥
हे अवनिजा विदेह वंश अवतंश सयानी।
तव सखि हम में बीच बहुत हे रति रस दानी ॥३५॥
अपर देव गन्धर्व नाग किन्नर वर वाला।
जन्म सिद्ध गुण रूप शील रस निधि छबि जाला ॥३६॥
परम पुण्य आत्मजा अहैं ये सकल नागरी।
अति कुशाग्रवर बुद्धि कला विद्या सु आगरी ॥३७॥
हे स्वामिनि वर वाम विपुल तव सेवा माहीं।
जिनकी वंशोत्पत्ति कदा कोउ जानत नाहीं ॥३८॥
श्री पद्मादिक अपर अमित बहु वाम नवेली।
वशि महलन तव चरण कमल सेवहिं अलवेली ॥३९॥

कहिये इन सम कदा होब हम सपनेहुँ माहीं ।
इनकी तुलना माहिं कबहुँ किंचित हम नाहीं ॥४०॥
स्वतः सिद्ध इन केर रूप गुण शील कलादी ।
ये सब भाँति अभिन्न अहैं तव शक्ति अनादी ॥४१॥
पर हे पंकज नयनि मनोहर सौम्य सु मूरति ।
रङ्गप्रिये वर चरित शील निधि अति सुठि सूरति ॥४२॥
रास रसिक शिरताज राज सुत श्री रघुनन्दन ।
प्राणाधिक प्रिय तिनहिं करत जिनको जग वन्दन ॥४३॥
ऐसे सुगुण महान अछत हूँ निज गौरव तजि ।
परम नीच हूँ केर निरखि लघु गुण सनेह सजि ॥४४॥
कीन प्रसंशा भूरि अहै यह तुम्हरेहिं जोगू ।
याही से हे प्रिये सराहत तुम को लोगू ॥४५॥
कर्म रूप गुण रहित जौन जन शरणहिं आवै ।
सोउ तव कृपा कटाक्ष पाय अति गौरव पावै ॥४६॥
निर्गुण हो गुण राशि अशुचि होवै जग पावन ।
नीच श्रेष्ठ तम होय कुरूपौ अति मन भावन ॥४७॥
यथा अनुत्तम असन पाय घृत की वर धारा ।
परम स्वाद मय होत श्रेष्ठ अति सुखद अपारा ॥४८॥
पुनि सोइ भोजन श्रेष्ट समपैं उत्तम पुरुषन ।
होय पदारथ सुफल ग्रहण हारो प्रसन्न मन ॥४९॥
तुम्हरी कृपा प्रसाद हमनि में जो गुण कर्मा ।
विद्या कला स्वरूप शील आदिक वर धर्मा ॥५०॥

जो कुछ मम तन माहिं समर्पित तव पद माहीं।
अब कीजै अति छोह सकल विधि तव कहलाहीं ॥५१॥
पुनि हे प्रिये प्रवीण प्रीति पालक प्रिय करनी।
परिकर उर सुखदानि परम प्रेमामृत भरनी ॥५२॥
हम सब को यह रास अबहिं पूरण भो नाहीं।
सो तब पूरण होय आप दोउ दै गल बाहीं ॥५३॥
रासस्थल के मध्य प्रमुख बनि स्थित होई।
करैं परीक्षा हमनि केर आनन्द समोई ॥५४॥
अमित जन्म के सुकृत केर फल जब जन पावै।
तब तुम्हरे पद पद्म माहिं निज चित्त लगावै ॥५५॥
तुम दोउ दम्पति दिव्य सच्चिदानन्द स्वरूपा।
सर्वोपरि आनन्द भोक्ता अमल अनूपा ॥५६॥
शोभा शील स्वभाव रूप रस सुख सनेह कर।
श्यामा नृपनन्दिनी प्राण वल्लभ किशोर वर ॥५७॥
एक रस षोड़श वर्ष सतत तुम दोउ कर रूपा।
काल कर्म गुण रचित न रुचि मय देह अनूपा ॥५८॥
जब विनीत वर भक्ति सहित अति मोद समेता।
गोपकुमारिन भाव भरी की विनय सचेता ॥५९॥
तब वर्धक सब भाव प्रीति पूरित पिय प्यारी।
रास सुमण्डल मध्य उपस्थित भये सुखारी ॥६०॥
यथा काम रति संग चन्द्रमा रोहणि संगा।
विमल गगन मधि लसत शरद पूर्णिमा प्रसंगा ॥६१॥

अथवा दामिनि सहित मेघ जैसे छबि पावत ।
तिमि पिय प्यारी केर सखिन मधि छटा सुहावत ।।६२।।
कछु न अपेक्षा जिनहिं उपेक्षा विश्व मझारी ।
युग दम्पति सियराम दिव्य रस रास बिहारी ।।६३।।
सो अति लोलुप बने रास मण्डल में राजैं ।
गोप सुता चहुँ ओर लसत अनुपम छबि छाजैं ।।६४।।
अस निज हृदय बिचारिं सुरन सुठि दिव्य सुमन वर ।
बर्षाये हर्षाय परम सुख पाय मुदित उर ।।६५।।
मनहुँ मनोरथ सिद्धि केर यह विधि समूह वर ।
या सर्वोत्तम चन्द्र चन्द्रिका परम कान्ति कर ।।६६।।
या कर्पूर सु बस्त्र जाल या गगन गंग की ।
पावन धार अपार क्षीर सागर तरंग की ।।६७।।
अथवा महा सुपुण्य मयी यश राशि सुहावै ।
येहि विधि पुष्प सु बृष्टि रास मण्डल छबि पावै ।।६८।।
तीनि लोक में श्रेष्ठ अमल आनन्द स्वरूपा ।
ताके सम्पति सहज युगल वर सरस अनूपा ।।६९।।
योग क्षेम के परम स्वभाविक सम्पति आहीं ।
"सीताशरण" विलोकि वदन बिधु मोद समाहीं ।।७०।।
गोप कुमारिन संग रंग रँगि युगल रसिक वर ।
प्रीतम प्रिया प्रवीण प्रीति पागे प्रमोद भर ।।७१।।
पावत स्वाद अपार रास क्रीड़ा रस लम्पट ।
बने परम आशक्त बचन बोलत अति अम्पट ।।७२।।

नृत्यत नटवर नवल नायिकन नेह समाये।
विधु बदनी वर वाम प्रिया को कण्ठ लगाये ।।७३।।
गावत गीत सनेह सने सुठि सुखद रसाला।
ताल ग्राम स्वर तान अलावत श्री नृपलाला ।।७४।।
रसमय मूर्ति सु मृदुल सौम्य श्रम स्वेद बिन्दु वर।
मुख मयंक पर लसत हँसत हिय अति उमंग भर ।।७५।।
निरखि हंसिगण विपुल ब्योम गंगा में जाई।
अपने पंख भिजाय रास मधि छिरकहिं आई ।।७६।।
अति शीतल जल सींचि पंख से व्यजन डुलावहिं।
येहि विधि भरीं सनेह प्रिया प्रीतमहिं रिझावहिं ।।७७।।
गोपसुता मन मोद सहित रघुवीर चरित वर।
गुप्त परम मन हरन मधुर मंजुल उदार तर ।।७८।।
लागीं करन सुगान सरस सौन्दर्य सूत्र वरि।
अति माधुर्य समेत सुधा सागर उमंग भरि ।।७९।।
शिशुपन ते पिय चरित यथा भै नवल किशोरा।
श्री रस राज सु सार स्वाद मय प्रेम विभोरा ।।८०।।
उच्च स्वरन करि गान सबनि मन मोद बढ़ायो।
सो सुनि "सीताशरण" प्रिया अति आनँद पायो ।।८१।।
परम प्रेम रस भरित विमल वर गान श्रवण करि।
बन के देवी देव महाँ आनन्द हृदय धरि ।।८२।।
पाये स्वाद अनूप मुर्छि मन मगन न सुधि तन।
यह कौतुक भरि पूरि रह्यो चहुँदिशि सिगरे बन ।।८३।।

गोप सुतनि येहि भाँति कीन जब गान तान वर।
तब मनहर अति सौम्य शील सागर उदार तर ॥८४॥
रसिकेश्वर अति रम्य मैथिली रमण सु नायक।
गान तान संगीत निपुण रस निधि सब लायक ॥८५॥
सुनि पावत बहु स्वाद मनहुँ अस ललित गान वर।
कबहुँ श्रवण नहिं कीन भये ऐसे प्रमुदित उर ॥८६॥
करत प्रशंसा भूरि कहत ऐसो वर गाना।
मैं नहिं कीनो श्रवण पगे सुख स्वाद सुजाना ॥८७॥
भई प्रसन्न इन्द्रियाँ सकल अतिसय सुख पाई।
इमि कहि बहु वर वाम संग निज अंग रमाई ॥८८॥
रमत रसिक शिरमौर चतुर चितचोर चपल चित।
रति रस लम्पट लाल लालची मन अति हुलसित ॥८९॥
वे सब गोपन सुता बिचारहिं अस मन माहीं।
मानहुँ दम्पति कदा रास इमि देखेउ नाहीं ॥९०॥
सब रस की आधार भूत मिथिलाधिप कन्या।
श्री मैथिली उदार चरित गुण निधि अति धन्या ॥९१॥
तिन के जीवन प्राण रसिक चूड़ामणि रघुवर।
रस स्वरूप रस रसिक रास रसिया पिय छबि धर ॥९२॥
मानहुँ परम अनूप आज अद्भुत रस रासा।
हमने देखेउ दृगन जानि अस हृदय हुलासा ॥९३॥
पावहिं गोप कुमारि निरखि पिय छवि अनुरागी।
गावहिं गुण गर्विता गीत अतिसय रस पागी ॥९४॥

गोप सुतनि को रास देखि श्री अवनि किशोरी।
बोलीं पिय सों वयन चयन भरि अति रस बोरी ॥९५॥
हे श्री नाथ प्रवीण प्रेम पालक हे छबि धर।
हे मम जीवन प्राण रसिक वल्लभ मम हिय हर ॥९६॥
कहिये कृपानिधान कवन बिधि गोप कुमारी।
आईं बेचन दूध दही मन परम सुखारी ॥९७॥
क्या कहि रोकेउ पन्थ आपने हे रघुराई।
इन ने उत्तर दीन कवन केहि बिधि हर्षाई ॥९८॥
पुनि हे पंकज नयन कवन कृत इन ने कीना।
कहिये जीवन प्राण आप ने क्या सुख लीना ॥९९॥
कीनो अङ्गीकार कवन विधि इन सब को पिय।
कहिये "सीताशरण" येही अभिलाष मोर हिय ॥१००॥

दो०-मैं प्रत्यक्ष लखन चहौं, इन नयनन हृदयेश।
सोइ कुछ करिय उपाय पिय, रस लम्पट रसिकेश ॥८॥

रसात्मा रस रमन समन सन्ताप पाय हर।
अव्यय अमल अनूप रूप सागर सुषमा कर ॥ १ ॥
सुनि प्यारी के वयन परम सुख अयन मोद कर।
उर की रुचि पहिचान गोप कन्यन सन रघुवर ॥ २ ॥
बोले बचन विशेष विमल बिधु बदन बिलोकी।
परम प्रेम रस सार अमल अनवद्य अशोकी ॥ ३ ॥
हे सब गोपकुमारि सकल मिलि निज कुल लीला।
करि दिखलाओ प्रियै परम मन हरन रसीला ॥ ४ ॥

पूर्व समय केहि भाँति दूध दधि बेचा तुम ने ।
केहि प्रकार तुम सबनि केर रोका मग हम ने ॥ ५ ॥
मम दर्शन के हेत प्रथम तुम सब क्या कीना ।
मैं तुम को केहि भाँति जाय निज दर्शन दीना ॥ ६ ॥
प्राण प्रिया सुख हेत करहु सो सकल चरित्रा ।
कोइ सखि धर नर रूप बनो मम सखा विचित्रा ॥ ७ ॥
रोकहु सखियन पन्थ प्रथम जिमि रोका हम ने ।
बेचहु सब दधि दूध प्रथम ज्यों बेचा तुम ने ॥ ८ ॥
सुनि पिय बचन रसाल परम प्रेमामृत पागीं ।
गोपकुमारीं सकल नवल लीला अनुरागीं ॥ ९ ॥
पिय प्यारी की प्रीति प्राप्ति हित गोप कुमारी ।
कोइ सखि बनि कोइ सखा विमल लीला विस्तारी ॥१०॥
बहुत सखी लिय दूध बहुत दधि बेचन आईं ।
कछुक सखा बनि खड़ी पंथ में सांट उठाईं ॥११॥
रोकहिं सब को पन्थ रुकत नहिं डाँट बतावहिं ।
गोप कुमारीं खड़ी मार्ग में मृदु मुसुकावहिं ॥१२॥
जिन को मन चित चोर लियो श्रीराम रसिक वर ।
खड़ीं सु मारग माहिं बिकीं बिन मोल सुभग तर ॥१३॥
करि कटाक्ष कमनीय व्यङ्ग वर बचन सुनावहिं ।
निरखि मंजु माधुरी सकल हिय कुंज बसावहिं ॥१४॥
हे अवधेश जनेश सुवन श्री चक्रवर्ति सुत ।
सब विधि सुखद सुजान श्याम सुन्दर सुशील युत ॥१५॥

ऐसी परम अनीति आप को करन न चाहिय ।
रोकत अवलन पन्थ श्रवण सुनि सब सकुचाइय ॥१६॥
हम सब वाला वृन्द दूध दधि बेचन आईं ।
नृप किशोर चितचोर पन्थ रोकेउ वरिआईं ॥१७॥
कहि इमि बचन रसाल ललन छवि रस सब पागीं ।
निरखैं "सीताशरण" मंजु मूरति अनुरागीं ॥१८॥
दधि चोरी मिस लाल सबनि परसत प्रिय अंगा ।
सो सब परम विभोर रँगी अतिसय रस रंगा ॥१९॥
येहि विधि राजकिशोर पगे सखियन रस रंगा ।
करि नित नवल बिहार सरस रस रास प्रसंगा ॥२०॥
रस स्वरूप सुख धाम राम अभिराम काम हर ।
निशि मधि सखियन कीन महा रस रास केलि कर ॥२१॥
दिनमधि हत अभिमान बसन्तोत्सव हर्षाई ।
करत रसिक शिर मौर राजनन्दन रघुराई ॥२२॥
श्रीमद्विश्वामित्र दत्त युग विद्या पावन ।
प्रजापती की सुता वला अतिवला सुहावन ॥२३॥
नित नव हिय उत्साह भरति सब की रक्षा करि ।
सुफल सुविद्यहु होत मानि धनि निजहिं मोद भरि ॥२४॥
सोचति निज मन माहिं राम रक्षक सब जग के ।
हम रक्षा करि तिनहिं होहिं अतिसय प्रिय सब के ॥२५॥
बोले श्रीमद्सूत सुनहु शौनक मुनि राई ।
गोप सुतनि कृत चैत्र मास रस निधि सुख दाई ॥२६॥

महारास रति रमण मनोरम अति प्रिय लीला ।
में कुछ वर्णन कीन यथा श्रुत परम रसीला ॥२७॥

अब पुनि तव रुचि जानि कहव प्रभु चरित सुहावन ।
जय-जय "सीताशरण" प्रेम लम्पट मन भावन ॥२८॥

जयति रसिक शिरमौर रास रसिया रस सागर ।
जय-जय परम प्रवीन प्रीति पालक प्रिय नागर ॥२९॥

जयति सखिन सुख दान मार मद मथन सुछवि धर ।
जय-जय "सीताशरण" रसिक मन हर प्रमोद घर ॥३०॥

जयति गोप कन्यकनि संग रस रास बिहारी ।
जय-जय जीवन प्राण मोद मन्दिर बलिहारी ॥३१॥

जयति मैथिली मोद करन मंजुल मृदु मूरति ।
जय-जय "सीताशरण" रसिक लल्लभ सुठि सूरति ॥३२॥

दोहा-जयति-जानकी जान प्रिय, जय-जय रसिक नरेश ।
जय-जय जीवन प्राण धन, रस लम्पट हृदयेश ॥ १ ॥
जयति मैथिली मन रमण, जय जय नृपति कुमार ।
जय जय सीताशरण पिय, जय जय परम उदार ॥ २ ॥

इति श्री युगल रहस्य माधुरी विलासे
विवाहोत्तर गोप कन्या रस रासे
सीताशरण सुमति प्रकाशे
अष्टमोऽध्यायः सम्पूर्णम्